14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 516

दिल माँगे मोर

समकालीन भारत में हिंग्लिश के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ

फ्रंचेस्का ओर्सीनी

अनुवाद : चंदन श्रीवास्तव

HINGLISH

एक सदी से ज़्यादा लम्बे भाषाई राष्ट्रवाद एवं आपसी दुराव और गहन प्रतिस्पर्धा की तक़रीबन इतनी ही लम्बी अवधि बीतने के बाद उदारीकृत और निचली जातियों की दावेदारी वाले भारत में हिंदी और अंग्रेज़ी के बीच की सीमाबंदी हाल-फ़िलहाल ज़्यादा लचीली हुई है। इसका नतीजा 'शुद्ध हिंदी' तथा 'ब्रिटिश/शुद्ध अंग्रेज़ी' की पकड़ के कुछ ढीले होने में निकला है। बेशक अंग्रेज़ी अब भी स्थानीय और वैश्विक संदर्भों में बृहत्तर सम्भावनाओं की भाषा है और ऐसा होना जारी है, लेकिन निचली जातियों के राजनीतीकरण और साक्षरता के चलते हिंदी का लोकवृत्त बड़ा हुआ है। चूँकि 'नव-मध्यवर्ग' अपने रोज़मर्रा तथा लोकरंजनी बरतावों में संकल्पपूर्वक द्विभाषी है, इसलिए हिंदी और अंग्रेज़ी के बीच का रिश्ता बहुधा समानांतर विस्तार का बन चला है। यह अलग बात है कि सार्वजनिक चर्चा में अब भी इसे हिंदी की घटती और अंग्रेज़ी की बढ़ती हैसियत के चश्मे से ही देखा जाता है।

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 517

> अंग्रेज़ी और देसी ज़ुबान के जीवंत मेल से बनी हिंग्लिश ऊर्जा और नवाचार से लबरेज़ एक बोली है जो भारतीय समाज की अनिवार्य तरलता को अपने में समेट लेती है।
>
> —दीप कांता दत्ता-रे
>
> यह दो संस्कृतियों के बीच का पुल है जो स्वयं में एक द्वीप बन चला है, उन लोगों के लिए एक विशिष्ट संकर संस्कृति जो मातृभाषा की ज़िंदादिली को छोड़े बग़ैर विदेशों में इसे समृद्ध बनाने के आकांक्षी हैं। जल्दी ही दुनिया में इसे बोलने वाले देसीजन अंग्रेज़ी बोलने वालों से ज़्यादा होंगे।
>
> — बादॉफ़
>
> हिंग्लिश के उभार की वास्तविक जीत यह नहीं है कि उसने अंग्रेज़ी या कह लें कि द इंग्लिश को पछाड़ दिया है। वैसी अंग्रेज़ी का वजूद तो अब भारत में है ही नहीं; भारत में इसकी छत्रछाया अपने पर्चों के लिए रट्टिफ़िकेशन मारने वाले छात्रों पर है, फ्रेंड, जो इस बात की एकदम परवाह नहीं करते कि वे वही महिमामयी क्वींस अंग्रेज़ी बोल रहे हैं या फिर लंघीमार मसालामिक्स या कुछ और।
>
> — आलोक राय
>
> कभी जिस दासत्व की अभिव्यक्ति तर्ज़े-अंग्रेज़ी से होती थी यह इससे उबरते आत्मविश्वासी भारत की आवाज़ है... 'हिंग्लिश' आधुनिक भारत यानी उदग्र और उद्दामी बलों का नाम है ... यदि भाषा से राष्ट्रीय पहचान प्रतिबिम्बित होती है तो फिर जिस तेज़ी से हिंग्लिश को अपनाया जा रहा है वह शेष विश्व के लिए बहुत पुरज़ोर सांस्कृतिक और आर्थिक संकेत है।
>
> — पी. खन्ना

ये कुछ आशावादी दावेदारियाँ हैं जो संकेत-मिश्रण (कोड-मिश्रण) और संकेत-परिवर्तन (कोड-स्विचिंग) के एक व्यापक दायरे के भीतर हिंदी और अंग्रेज़ी को आपस में बाँधने वाली परिघटना के बारे में हैं जिसे हिंग्लिश[1] के नाम से जाना जाता है। भारत में आम बोलचाल में हिंदी और अंग्रेज़ी के बीच संकेत-परिवर्तन और संकेत-मिश्रण या तो अंग्रेज़ी के साँचे के भीतर होता है या फिर हिंदी के। लेकिन, भारतीय तर्ज़ की अंग्रेज़ी और साथ ही देवनागरी लिपि में लिखी अंग्रेज़ी या रोमन लिपि में लिखी हिंदी में भी यह होता है।[2] चूँकि भाषाशास्त्रीय दृष्टि से हिंदी को एक स्थिर क्रियोल या फिर मिलवाँ बोली नहीं माना जा सकता, ऐसे में विभिन्न टिप्पणीकारों द्वारा रेखांकित भाषाई प्रयोग के विविध प्रकार, बरताव, दीवान, शैली, रुझान और सामाजिक शक्तियों के लिए एक ही पद का प्रयुक्त होना अपने आप में महत्त्वपूर्ण तथ्य है, क्योंकि हिंग्लिश के पक्ष में एक दावा तो आख़िर यही है कि यह अंग्रेज़ी और हिंदी के बीच की मौजूदा सामाजिक बाधाओं को तोड़कर एकता क़ायम कर रही है।[3] इस तरह, हिंग्लिश को न सिर्फ़ शहरी, कॉस्मोपॉलिटन युवा-संस्कृति की बल्कि एक नये, उद्योगशील और आत्मविश्वासी भारत की भी भाषा बताया जाता है, जहाँ हुनर और सही रुझान रहने पर सामाजिक तथा जातिगत पृष्ठभूमि को पछाड़ा जा सकता है; आर्थिक समृद्धि तथा वैश्विक

---

[1] भारत में यह परिघटना सिर्फ़ हिंदी तक सीमित नहीं, बल्कि अन्य भारतीयों भाषाओं में भी समान रूप से मिलती है, साथ ही साथ हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच भी फेंटफाट मिलती है. मौकाशी-पणेकर (2011) और प्रसाद (2011); फ़िलिपीन में अंग्रेज़ी-टैग्लॉग-स्पेनिश के मिश्रण टैग्लिश के लिए देखें, राफ़ेल (1995).

[2] संकेत-परिवर्तन और भाषा मिश्रण के लिए मैंने मुख्यत: ऑऊर (1998) की परिभाषा को अपनाया है.

[3] 'क्या अंग्रेज़ी सिर्फ़ एकल शक्ति है? मात्र एक विचार भर? या फिर यह कई विचारों का योग है- एक ऐसा शब्द जो बहुविध धाराओं और रणनीतियों को धारण करता है... ? तो क्या फिर इसमें विविध प्रेरणाएँ काम कर रही हैं' यह कहना है ऐडवर्टाइज़िंग गुरु और टिप्पणीकार संतोष देसाई का. देखें, कोठारी और स्नेल (2011) : 203.

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 518

मौजूदगी ने लोगों में अपनी संस्कृति और भाषा को लेकर एक नया आत्मविश्वास फूँका है।[4] हिंग्लिश को वैश्वीकृत हिंदुस्तानी मध्यवर्ग की अनौपचारिक भाषा और 'ज़्यादा का इरादा' करने वाले उर्ध्वगामी निचले देसी मध्यवर्ग तथा कामगार वर्ग की आकांक्षाओं की भाषा, दोनों माना जाता है। हालाँकि निचले देसी वर्ग तथा कामगार वर्ग के भाषाई कोष निश्चित ही अलग क़िस्म के हैं और दोनों भाषाओं के भीतर इनकी पहुँच भी कुछ अलग है।

हिंदी और अंग्रेज़ी (तथा अन्य भारतीय भाषाओं) के बीच संकेत-परिवर्तन और संकेत-मिश्रण का इतिहास बहुत लम्बा है और इसका एक सिरा औपनिवेशिक युग तक पहुँचता है और अन्य भारतीय भाषाओं के समान विदेशज अंग्रेज़ी शब्दों को समाहित करने का हिंदी का इतिहास भी बहुत पुराना है। भाषाई मिश्रण तब मुख्य रूप से बोलचाल की भाषा से जुड़ी परिघटना थी, हालाँकि सभी नहीं तो भी कुछ लेखक इसका उपयोग लेखन की भाषा में भी करते थे, ख़ासकर व्यंग्यात्मक या फिर नवीन भाषागत उद्भावनाओं और चालू भाषाई बरतावों के महिमामण्डन के उद्देश्य से।[5] तुलनात्मक रूप से देखें तो 1990 के दशक यानी उदारीकरण के दौर के बाद से एक नयी सहिष्णुता नज़र आती है। इसके तहत ढेर सारे वैसे संदर्भों— जैसे टीवी के समाचार, अख़बार, विज्ञापन, हिंदी फ़िल्मों के संवाद और गीत आदि जहाँ भाषाई मिश्रण की अनुमति नहीं दी जाती थी वहाँ वस्तुत: विविध भाव-भंग से, जिनका ज़िक्र ऊपर किया गया है, हिंग्लिश को वरीयता दी जाने लगी है। दरअसल 26 सितम्बर, 2011 के सरकारी परिपत्र में नौकरशाहों और किरानियों को अपनी फ़ाइल 'सरल हिंदी' यानी संस्कृतनिष्ठ की जगह चालू अंग्रेज़ी शब्दों से युक्त हिंदी में लिखने को कहा गया। इस पर विवाद हुआ लेकिन इससे यह भी ज़ाहिर हुआ कि एक आधिकारिक बाधा हटा ली गयी है।[6]

संकेत-परिवर्तन और संकेत-मिश्रण की नज़ीर के तौर पर हिंग्लिश का भाषाविज्ञानियों ने, जो व्यक्तियों के बीच बोलचाल की जीवंत भाषा को अपनी आधार-वस्तु बनाते हैं, विस्तारपूर्वक अध्ययन किया है।[7] कुछेक भाषा-विज्ञानियों ने लिपिबद्ध सांस्कृतिक उत्पाद जैसे टीवी धारावाहिक, फ़िल्म तथा उपन्यास के संदर्भ में भाषाई मिश्रण का अध्ययन किया है और उनकी अध्ययन-विधि पाठालोचन और सांस्कृतिक अध्ययन करने वाले विद्वानों के लिए उपयोगी मॉडल प्रदान करती है।[8] बहरहाल, वक्ता की भाषाई अंतर्क्रियाओं को पकड़ने और उसकी व्याख्या करने में भाषाविज्ञानियों ने भले ही बारीकी का परिचय दिया हो, लेकिन जब बात उस व्यापक सांस्कृतिक और सामाजिक फ़लक की आती है जिसके भीतर ये भाषाई अभिव्यक्तियाँ सम्भव होती और अर्थ-धारण करती हैं, तो भाषाविज्ञानियों के विचार-विवेचन की कोटि सामान्यीकरण का सहारा लेने लगती है। इस वजह से हिंग्लिश का अर्थालोचन

---

[4] जैसा कि एफ़एम रेडियो मिर्ची के सीईओ प्रशांत पांडेय के इन बेलाग शब्दों से पता चलता है, '1991 से, जब उदारीकरण हुआ, आर्थिक नीतियों और प्रगति ने उस जाति-व्यवस्था को तोड़ना शुरू किया जिसमें आपका पेशा, आपकी जाति और उस जगह से पूर्व-निर्धारित चला आता था जहाँ आपने जन्म लिया है. आज विकास कहीं ज़्यादा समताकारी हो चला है— आप किस सामाजिक संस्तर से आते हैं, यह बहुत मायने नहीं रखता. सही हुनर और अनुकूल प्रवृत्ति है तो आप किसी भी क्षेत्र में अपना भाग्य आजमा सकते हैं'. देखें, पांडेय, कोठारी और स्नेल (2011) : 193.

[5] देखें, रुपर्ट स्नेल (1990) : 53-68. तथा डी. शर्मा (2011). इसके दस्तावेज़ी साक्ष्य रुडयार्ड किपलिंग पर शर्मा (2011), उर्दू के शायर अकबर इलाहाबादी पर निझावन (2010) : 269-271. रेणु की 1954 की कृति *मैला आँचल* पर हैन्सेन (1981) के काम और सलमान रश्दी की कृति *मिडनाइटस् चिल्ड्रेन* जिसे त्रिवेदी (2003) में बुरी तरह ख़ारिज और श्रीवास्तव (2005) में न्यायसंगत ढंग से विवेचित किया गया है, आदि में देखा जा सकता है.

[6] हिंदी मीडिया में इस पर मिली-जुली प्रतिक्रिया आयी थीं. कुछ प्रतिक्रियाएँ सकारात्मक थीं, सैनी (2011), लेकिन ज़्यादातर प्रतिक्रियाएँ दोषदर्शिनी थीं जैसे 'हिंदी पर प्रहार, हिंग्लिश का परचम' (2012).

[7] इसके संदर्भ-ग्रंथों की सूची लम्बी है जिसमें बी.बी. कचरु (1975), (1978) से लेकर मल्होत्रा (1980) तथा डे और फ़ंग (2014) तक शामिल हैं.

[8] मिसाल के लिए विश्वमोहन (2004), मेस्थ्री (2005), भट्ट (2008), साइ (2011); उपयोगी प्रविधियों के लिए देखें, एंड्राउत्सोपोलस (2012) और सिब्बा (2012).

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 519

करना और उन विशेष संदर्भों को पहचानने की कोशिश करना उपयोगी है जिसमें वक्ता और सांस्कृतिक उत्पाद हिंग्लिश का प्रयोग एक उप-क्षेत्रक के रूप में करते हैं, जिसमें प्रत्येक की अपनी संस्थागत अर्थवत्ता, ताक़त और तर्क हैं और जहाँ विभिन्न भाषागत विचारधाराएँ सह-अस्तित्व या संघर्ष में होती हैं।[9]

उदारीकरण के दौर के बाद से एक नयी सहिष्णुता नज़र आती है। इसके तहत ढेर सारे वैसे संदर्भों— जैसे टीवी के समाचार, अख़बार, विज्ञापन, हिंदी फ़िल्मों के संवाद और गीत आदि जहाँ भाषाई मिश्रण की अनुमति नहीं दी जाती थी वहाँ वस्तुतः विविध भाव-भंग से, जिनका ज़िक्र ऊपर किया गया है, हिंग्लिश को वरीयता दी जाने लगी है।

इसके अतिरिक्त, 'दिल माँगे मोर' और 'इमोशनल अत्याचार' जैसी हिंग्लिश की उक्तियाँ जो विज्ञापन, टीवी मीडिया, फ़िल्म और रेडियो सरीखे व्यावसायिक तंत्र के ज़रिये निर्मित और संचरित होती हैं और यह तंत्र लोगों के बीच से ऐसी नवोन्मेषी उक्तियाँ ललक कर उठाता भी है[10], अपने पुनर्मिश्रण, पुनरोपयोग और पुनरोच्चार में बताती हैं कि हिंग्लिश किस हद तक ज़बाँदानी का एक ठीहा बन चली है। इस अर्थ में देखें तो विदेशज अंग्रेज़ी शब्दों को समाहित करने की ऐतिहासिक प्रवृति आत्मचेतस, नवोन्मेषी उपयोगों में तब्दील होती जान पड़ती है।[11] विज्ञापन, न्यूज़मीडिया और राजनीति, कार्यस्थल, शैक्षिक और कॉलेज की ज़िंदगी, फ़िल्म और फ़िल्म संगीत, टीवी रिऐलिटी शो के सर्वेक्षण के ज़रिये इस आलेख में शुरुआती तौर पर उन बहुविध संदर्भों को खोला गया है जिन्में सामान्यत: हिंग्लिश काम आती है। अपने इस रूप में यह आलेख किसी विशिष्ट प्रकरण का अध्ययन न होकर शोध का एजेंडा या और शोध का संदर्भ प्रदान करता है। एक चालू प्रवृत्ति के रूप में हिंग्लिश चूँकि जन-सामान्य और मीडिया के लिए बड़ी सन्नद्ध रुचि का विषय है, इसलिए आलेख में अख़बारों और ब्लॉग के ज़रिये हासिल सार्वजनिक टिप्पणियों को बड़े हद तक आधार बनाया गया है।

भाषाई विचारधाराएँ

मीडिया की सार्वजनिक दुनिया में हिंग्लिश को लेकर चलने वाली विचारधारात्मक बहस हिंदी को 'मातृभाषा', 'राष्ट्रभाषा' और 'जनभाषा' मानकर चलती है और इस रूप में यह बहस हिंदी को राष्ट्रीय गर्व के ऐसे जामे में लपेटती है, जिससे उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष की ध्वनि निकलती है और साथ ही इससे अंग्रेज़ी को प्राप्त सुविधासम्पन्नता की वर्गीय आलोचना भी व्यक्त होती है। इसके बरअक्स

---

[9] इस दृष्टि का फलदायी उपयोग कोठारी और स्नेल (2011) ने किया है जो इस विषय पर अभी तक अपने ढंग की एकमात्र उपलब्ध पुस्तक है.

[10] अनुजा चौहान कृत पेप्सी के ऐड 'ये दिल मांगे मोर!' (1998) का प्रयोग हिंदी की एक रोमांटिक कॉमेडी फ़िल्म के शीर्षक के रूप में किया गया, महादेवन (2004)— और इस पर कॉपीराइट के उल्लंघन का मामला चला; इससे पहले इस पंक्ति का उपयोग भारतीय सेना के कैप्टन विक्रम बत्रा ने निजी घोषवाक्य के रूप में किया था. बत्रा (1999) में करग़िल युद्ध के दौरान शहीद हुए और मरणोपरांत उन्हें भारत का सर्वोच्च सैन्य पुरस्कार दिया गया. 2014 के चुनाव-प्रचार में बत्रा के गृह नगर में नरेंद्र मोदी ने उपर्युक्त पंक्ति का उपयोग किया तो सोनिया गांधी और नरेंद्र मोदी के बीच वाक् युद्ध चला. देखें, घोष (2014).

[11] जैसा कि 'मेरा नम्बर कब आएगा' के निम्नलिखित उदाहरण से ज़ाहिर होता है : 'नम्बर' हिंदी में लम्बे समय से समाहित विदेशज शब्द है लेकिन 2007 के पेप्सी के ऐड में इसका पुनर्संस्कार आकांक्षापरक हिंग्लिश में हुआ ; इसका एक पुनर्संस्कार एक बार फिर से स्टार टीवी के 2011 के एक कॉल-इन शो में हुआ जिसमें नम्बर से आशय फ़ोन-नम्बर से था और और संदर्भगत ध्वनि लोकप्रिय ऐड की निकलती थी.

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 520

विचारधारात्मक बहस के दूसरे सिरे पर अंग्रेज़ी को रखा जाता है और उसे अवसरों तथा सामाजिक और स्थानिक गतिमयता की भाषा बताया जाता है।[12] आज़ाद हिंदुस्तान के तक़रीबन सत्तर सालों में विचारधारात्मक ध्रुवीकरण की ये स्थितियाँ इतनी पायेदार हो गयी हैं कि अगर कोई अलग राय रखे, मसलन अंग्रेज़ी-हिंदी की द्विभाषिकता की बात कहे, तो उसे भी दो ध्रुवांतों 'हिंदी वाला' या 'अंग्रेज़ी वाला' में से किसी एक के ख़ाने में डाल दिया जाता है।[13] हिंग्लिश को लेकर ठेठ 'हिंदी-विचार', जैसा कि 2011 के सरकारी परिपत्र से ज़ाहिर है, यह मान कर चलता है कि हिंग्लिश अंग्रेज़ी वालों का एक षड्यंत्र है जिसका दृढ़ प्रतिकार किया जाना चाहिए और इसे रोका जाना चाहिए।[14] यहाँ तक कि रुचि का विषय मान कर इसका अध्ययन करना या फिर सहज जिज्ञासावश इसे एक सामाजिक-सांस्कृतिक परिघटना के रूप में देखना भी इस मान्यता के हिसाब से एक दुरभिसंधि से कम नहीं है। भारतीय तर्ज़ की अंग्रेज़ी को लेकर हुआ अंग्रेज़ी-लेखन एक लम्बे समय से इस तर्ज़ की अंग्रेज़ी, भाषाई मिश्रण और अंग्रेज़ी पर पड़े भारतीय प्रभावों को नामंज़ूरी और हास्य- भाव से देखता आया है, जिसमें उसके थोपे जाने का बोध झाँकता है।[15] लेकिन जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है भारतीय अंग्रेज़ी/हिंग्लिश को आज कहीं ज़्यादा उत्साह के साथ देखा जा रहा है, एक ऐसी भाषा के रूप में जो उदारीकरण के बाद की युगचेतना को अपने में समाहित करती है:

> जब ज़ी (टीवी चैनल) ने 18 साल पहले दैनिक हिंग्लिश न्यूज़ बुलेटिन प्रसारित करना शुरू किया तो यह एक बुरा मज़ाक़ जान पड़ता था। बहरहाल, आजकल हिंग्लिश को बड़े पैमाने पर युवजन की ज़ुबान मान लिया गया है जो विज्ञापनदाताओं और टीवी रिऐलिटी शो के प्रोड्यूसरों के लिए भाषागत बाधाओं को लाँघ अखिल भारतीय दर्शक वर्ग तक पहुँचने में मददगार है ...
>
> भारतीयों के भीतर मुहावरों के बीच आवाजाही की ख़ास क्षमता होती है, मानो वे मुहावरे नहीं बल्कि एक अदृश्य राह से जुड़े दो बारजे हों। *डेल्ही बेली* का संगीत के.एल. सहगल से पंक (एक प्रकार का संगीत) की ओर कुछ उसी तरह बढ़ता है जैसे आज हिंदुस्तान की लड़कियाँ छोटी दफ़्तरी पोशाकों से निकल हैरतअंगेज़ सहजता और आत्मविश्वास के साथ साड़ी में समा जाती हैं।[16]
>
> और अगर उदारीकरण के बाद का प्रभुत्वशाली विमर्श अंशत: पुराने दाग़-धब्बों से अपने को 'मुक्त' करने के बारे में रहा है, तो फिर स्पष्ट है कि हिंग्लिश को इसमें किस तरफ़ खड़ा देखा जा रहा है :
>
> इस देश में दो भारत हैं। एक भारत पगहे से बँधा उसे झटके दे रहा है, आगे निकलने को आकुल है और उन सभी विशेषणों को जी लेना चाहता है जिसकी दुनिया हम पर बारिश कर रही है। दूसरा भारत स्वयं पगहा है। एक भारत कहता है, 'मुझे बस एक मौक़ा दो और मैं अपने को साबित करके दिखा दूँगा।' दूसरा भारत कहता है, 'पहले अपने को साबित करो, शायद तब तुम्हें अपने मन की करने का मौक़ा मिले।' एक भारत हमारे हृदय की आशाओं में पलता है, दूसरा हमारे दिमाग़ की शंकाओं में दुबका रहता है ...
>
> *टाइम्स ऑफ़ इण्डिया* का विज्ञापन[17]

---

[12] ला डूसा (2014).

[13] सिविल सर्विस की प्रवेश परीक्षा पर केंद्रित बहस को देखिए : एनडीटीवी पर 'वी द पीपुल' नामक बहस के एक कार्यक्रम में शो की प्रस्तोता बरखा दत्त ने वक्ताओं (अशोक वाजपेयी, आलोक राय और अभय कुमार दुबे) द्वारा निरंतर यह ध्यान दिलाने के बावजूद कि हम लोग अंग्रेज़ी-विरोधी नहीं हैं लेकिन चाहते हैं कि अंग्रेज़ी में शिक्षित अभ्यर्थियों की भी भारतीय भाषाओं में दक्षता की परीक्षा हो, लगातार ऐसे पक्षों को पेश किया जो सीधे-सीधे अंग्रेज़ी या हिंदी या अंग्रेज़ी-विरोध की हिमायत करते हों; देखें, http://www.ndtv.com/video/player/we-the-people/watch-the-language-debate-hindi-hain-hum/330772, 20.7.2014, (लिंक की प्राप्ति तिथि 30.1.2015).

[14] अभय कुमार दुबे,. अंतिम परिचर्चा, सराय हिंग्लिश कार्यशाला, 18-19 अगस्त. इस लिंक पर उपलब्ध, http://sarai.net/hinglish-workshop-18-19-august-2014-recordings/ (लिंक प्राप्ति की तिथि 31 जनवरी 2015).

[15] बी.के. जॉन (2007).

[16] पी.के. मेहरोत्रा (तिथि अज्ञात).

[17] विलियम एम. ओ'बर्र (2008).

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 521

इस नज़रिये के मुताबिक़ अंग्रेज़ी की आलोचना अक्सर सामाजिक गतिशीलता की आलोचना मान ली जाती है।

हिंदी-अंग्रेज़ी विवाद में सीधे अंग्रेज़ी की तरफ़ होने की जगह हम हिंग्लिश को द्विभाषिकता का पक्षधर बनकर देख सकते हैं और साथ ही भाषाई संकेतों या कोड्स को पहचानने तथा उनके बीच आवाजाही करने की क्षमता के रूप में भी। स्त्री-पात्रों के प्राधान्य वाले अनुजा चौहान के उपन्यास *द ज़ोया फ़ैक्टर* की नायिका ऑस्ट्रेलिया में पैर रखते वक़्त एकभाषिता के बारे में विस्मय से सोचती है कि, 'जो लोग सिर्फ़ एक भाषा जानते हैं ... यह तो बड़ी विचित्र बात है, क्योंकि अगर उन्हें किसी से नज़दीकी हो जाए, क्रोध आये या वे प्रेम कर बैठें तो फिर वे किस (भाषा) के आसरे होंगे?' संतोष देसाई के शब्दों में यदि हिंग्लिश 'कहीं न कहीं हमें अंग्रेज़ी के विचार को किनारों पर कुंद करने का मौक़ा देती है' और 'अन्य भाषाओं से अंग्रेज़ी को अलगाने वाली सीमा-रेखा को तोड़ती है', तो साथ ही इसने हिंदी को म्यूज़िक वीडियो, विज्ञापन और फ़ोटोग्राफ़ी की दृश्य-भाषा के ज़रिये एक *कूल* देसी ब्राण्ड हासिल करने में भी मदद पहुँचाई है।[18]

हिंग्लिश को लेकर ठेठ 'हिंदी-विचार', जैसा कि 2011 के सरकारी परिपत्र से ज़ाहिर है, यह मान कर चलता है कि हिंग्लिश अंग्रेज़ी वालों का एक षड्यंत्र है जिसका दृढ़ प्रतिकार किया जाना चाहिए और इसे रोका जाना चाहिए। ... इसे एक सामाजिक-सांस्कृतिक परिघटना के रूप में देखना भी इस मान्यता के हिसाब से एक दुरभिसंधि से कम नहीं है।

सवाल यह है कि हिंग्लिश कितनी समावेशी है? और, क्या यह बस एक परिघटना है या अनेक —जिसकी गतिकी और अर्थ अपने दायरे—न्यूज़मीडिया, राजनीति, शिक्षा और कार्य से लेकर विज्ञापन, संगीत, युवा-संस्कृति तक— बदलते रहते हैं? अगर हिंग्लिश की सफलता के पीछे एक वजह यह गिनायी जाती है कि यह बाधाएँ तोड़ती और संवाद-संचार को सम्भव बनाती है तो दूसरी तरफ़ यह बात भी है कि हिंग्लिश बोलने वाला जिस सामाजिक-वर्ग का होता है उसकी छाप भी इस भाषा पर होती है और इस अर्थ में हिंग्लिश अब भी बड़ी सूक्ष्म रीति से अपने बोले जाने के लहज़े, बलाघात और शब्दों के चयन आदि के हिसाब से सामाजिक ऊँच-नीच की सूचना देती है। जैसा कि देवयानी शर्मा का कहना है, इस वजह से हिंग्लिश एक विरोधाभास में बदल जाती है :

> यदि आप धाराप्रवाह हिंग्लिश बोलते हैं, बोलने में विशेषकर उस मानक शहराती हिंदी और अंग्रेज़ी का उपयोग करते हैं जो कि आपके परिवेश की है तो फिर इसे महानगरीय विशेषाधिकार के रूप में देखा जा सकता है। हिंग्लिश की अन्य क़िस्मों से सामर्थ्य-शक्ति की कमी और ऊपर उठने की आकांक्षा के संकेत ग्रहण किये जाते हैं।[19]

शर्मा के शब्दों में कहें तो महत्त्वपूर्ण सवाल, 'सिर्फ़ यही नहीं कि कोई हिंग्लिश बोलता है, बल्कि यह भी कि कोई हिंग्लिश सुनता और गुनता है और बोलने वाले को एक वर्ग-विशेष से जोड़कर देखता है। यह चीज़ हिंग्लिश को हमेशा एक संस्तरीकृत संदर्भ का हिस्सा बनाएगी और यह अपनी समग्रता में एकता की ताक़त नहीं बन सकती' इस वजह से, आलेख के प्रत्येक हिस्से और उदाहरण में मैं समावेशन और स्तरीकरण के सवाल उठाऊँगी। बेशक मैं भाषाविज्ञानियों की इस चेतावनी से आगाह हूँ कि वक्ता जिस भाषाई कोड का इस्तेमाल कर रहा है उसके अर्थों में दोष-दर्शन के अपने

---

[18] संतोष देसाई (2010). यह भी देखें, *टाइम्स ऑफ़ इण्डिया* के निदेशक राहुल कंसल का यह वक्तव्य, 'हिंदी हैड मास अपील बट नो ब्रांड', कोठारी एवं स्नेल (2011) : 206.

[19] देवयानी शर्मा (2011) : 205.

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 522

ख़तरे हैं। इसके बावजूद मैं सांस्कृतिक उत्पाद और प्रस्तुतियों की व्याख्या में ऐसा करूँगी, क्योंकि इनके आत्मचेतस् उपयोग और हिंदी और अंग्रेज़ी के विभिन्न दीवानों, लहजों, शब्दों और मुहावरों का रचनात्मक मिश्रण, और अंग्रेज़ी तथा हिंदी से जुड़ी प्रच्छन्न या प्रकट विचारधाराएँ समूहगत पहचान (चाहे वे अस्तित्व में हों या कल्पित) तथा सांस्कृतिक और सामाजिक विशिष्टता की पुरज़ोर कशिश से भरी हैं।

ये दिल माँगे मोर

विज्ञापन को ठीक ही उदारीकरण के दौर के बाद के भारत के रूपांतरण के लिए महत्त्वपूर्ण बताया गया है कि विज्ञापनों ने बहुराष्ट्रीय निगमों के उत्पादों के प्रवेश के लिए राह सुगम की। समृद्धि की जीवनशैली के नव-मध्यवर्ग के सपने और एक ही साथ वैश्विक तथा देसी बने रहने की उसकी आकांक्षा के निर्माण की प्रयोगशाला भी विज्ञापन ही हैं। हरीश त्रिवेदी का कहना है कि अब विज्ञापन एक ऐसा क्षेत्र बन चला है जहाँ हिंग्लिश कोई अपवाद नहीं बल्कि एक नियम है।[20] विज्ञापन-जगत के एक कारोबारी का कहना है कि बहुराष्ट्रीय निगमों के अंग्रेज़ी स्लोगन के हिंदी अनुवाद से काम नहीं चलता ... 'हो सकता है आपकी बात समझ ली जाए लेकिन उसके तार दिल से नहीं जुड़ते। इसी के चलते आज सभी बहुराष्ट्रीय निगम अपने विज्ञापनों में हिंग्लिश बोलते हैं'[21] ऐसे में पैंटीन का 'कम ऑन गर्ल्स, इटस् योर टाइम टू शाइन', 'कम ऑन गर्ल्स, वक़्त है शाइन करने का!' हो गया है। जेटीडब्ल्यू इण्डिया की पूर्व उपाध्यक्ष और एग्ज़िक्यूटिव क्रियेटिव डायरेक्टर तथा अब उपन्यासकार अनुजा चौहान की बदौलत पेप्सी का 'आस्क फ़ॉर मोर' बदल कर 'ये दिल माँगे मोर' हो गया है। एक तो माँगे और मोर के बीच चतुराई से अनुप्रास बैठाया गया है, फिर 'माँगे' को बोलने में 'आ' की एक लम्बी सम्भावनासूचक ध्वनि निकलती है जो कि दृश्य रूप में और ध्वन्यात्मक लिहाज़ से भी चाहत को अभिव्यक्त करती है।[22] चौहान ने पेप्सी के लिए आतुर सवाल 'मेरा नम्बर कब आएगा' पंजाबी तर्ज़ के जोशीलेपन की सूचना देते 'ओये बबली' और 'किटकैट ब्रेक बनता है' सरीखी उक्तियाँ रचकर विज्ञापनों में हिंग्लिश की राह तैयार की।[23] 'मेरा नम्बर कब आएगा' वाले बहुत से विज्ञापनों में से एक में पहले खेल के मैदान में अपनी बारी की प्रतीक्षा करता एक छोटा लड़का दिखाया जाता है, फिर एक ऐसा लड़का बास्केटबॉल का कोच जिसकी उपेक्षा करता है और आख़िर को एक ऐसा लड़का जो एक लड़की को चूमना चाहता है ... हर वक़्त लड़का पूछता है कि 'मेरा नम्बर कब आएगा?' आख़िरी दृश्य में, पहले वॉयस ओवर में कहा जाता है, 'अब तो आ ही जाएगा', क्योंकि तब तक पेप्सी की बोतल का ढक्कन अपने ऊपर लकी नम्बर ले आ चुका होता है, यह वही नम्बर है जिसके सहारे बड़े-बड़े पुरस्कार हासिल होने हैं और लड़का एकदम से आश्वस्त होकर कहता है, 'मेरा नम्बर आएगा'। विज्ञापन-जगत के एक पेशेवर के शब्दों में :

> यह एक मज़ेदार ऐड है क्योंकि पहले लड़का एकदम से लूज़र (परास्त) जान पड़ता है और दूसरे, ऐड के आख़िर में भी वह लूज़र ही है, उसकी बारी अब भी नहीं आयी है। कोई भी ब्रांड लूज़र के साथ जुड़ाव नहीं चाहता। लेकिन इस ऐड के साथ, हमने विनर (विजेता) के साथ नहीं बल्कि उन लाखों लोगों के साथ जुड़ने की कोशिश की जो कभी जीतेंगे नहीं।[24]

---

[20] कोठारी एवं स्नेल (2011) : xviii.

[21] अग्रणी विज्ञापन एजेंसी पब्लिसिस इण्डिया के क्रियेटिव हेड अशोक चक्रवर्ती. उनके सहकर्मी और एक्जिक्यूटिव क्रियेटिव डायरेक्टर संजय सिपाहीमलानी ने ध्यान दिलाया कि कॉपीराइट के कारोबार में हिंदी के भाव अब चढ़ती पर हैं : 'दस साल पहले अगर कोई सटीक जान पड़ते अंग्रेज़ी के वाक्य में हिंदी का प्रयोग करता तो मुझे नहीं लगता कि हमलोग उसको नौकरी पर रखते. तब यह शिक्षा की कमी का एक लक्षण कहलाता. लेकिन आज यह एक बड़ी सम्पदा है'. देखें, बीसन (2012).

[22] मैं उस अज्ञात समीक्षक की आभारी हूँ कि उसने मुझे इन विशेषताओं के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया.

[23] *ओय* पंजाबी में सम्बोधनवाचक शब्द है. और *बबली* अंग्रेज़ी के उत्साह बोधक शब्द को पंजाबी में छोटी बच्ची के लिए प्रयुक्त शब्द *बबली* के साथ फ़िट कर देता है.

[24] पी. खन्ना (2010).

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 523

जेडब्ल्यूटी की स्वाति भट्टाचार्य ने मेरे साथ साक्षात्कार में एक बीज-शब्द 'अंतरंगता' का प्रयोग किया।[25] इस 'अंतरंगता' तक पहुँचने के लिए विज्ञापन-जगत में हिंग्लिश के भाषाई नवाचार और रचनात्मकता का दोहन शॉर्टकट के रूप में होता है। अंग्रेज़ी में शिक्षित लोगों के लिए यह जड़ों से जुड़े होने का और 'देसी' जन के लिए यह (सपनों और आकांक्षाओं की) सामाजिक गतिशीलता का भी अर्थ देता है।

विज्ञापन-जगत में हिंग्लिश या तो हिंदी की या फिर रोमन लिपि में लिखी मिश्रित भाषा की कैचलाइन के रूप में होती है अथवा नागरी लिपि में लिखी अंग्रेज़ी की कैचलाइन के रूप में। भाषा दृश्यगत स्लोगन और ब्राण्ड नेम के बीच, पात्रों के संवाद या एकालाप में, जिंगल कहलाने वाले गीत में और पात्रों के मुँह से निकलती उक्तियों या वॉयस ओवर में दोलायमान या फिर मिश्रित होते चलती है। दोलायमानता की स्थिति बोलने के लहज़े और दीवान में बदलाव के रूप में भी देखी जा सकती है (भारतीय अंग्रेज़ी बनाम अंतर्राष्ट्रीय अंग्रेज़ी, हिंदी का क्षेत्रीय रूप बनाम हिंदी का औपचारिक रूप), और फ़िल्म के संवाद तथा गीतों के अंतर्पाठगत संदर्भों में भी। हर मिश्रण या विचलन, चाहे वह कूट का हो या फिर लिपि का, दर्शक के साथ एक अनौपचारिक और अंतरंग रिश्ता बनाने के लिए भाषा-स्थैर्य को झटका देता है। इस रिश्ते को विज्ञापनदाता कथाओं के माध्यम से क्रमवार बढ़ते विज्ञापन के ज़रिये स्थिर बनाना और ब्रांड के प्रति निष्ठा में बदलना चाहता है।

पेप्सी के 'ये दिल माँगे मोर' प्रचार अभियान के ढेर सारे विज्ञापनों में से दो विज्ञापन यह दिखाने में मददगार हैं कि केवल एक प्रचार-अभियान कितने सारे सांस्कृतिक पदों का उपयोग करता है और विज्ञापन किस भाँति आकांक्षा (ये दिल माँगे मोर) के विचार को लक्षित विभिन्न श्रोताओं के लिए व्याख्यायित करते हैं। पहले विज्ञापन में मुम्बई का एक 'साधारण' और उकताहट से भरा कॉलेज का छात्र बॉलीवुड के सितारे रानी मुखर्जी, शाहरुख़ ख़ान और काजोल के सपनों से चकाचौंध में है और यही चकाचौंध एक निजी मुलाक़ात में तबदील हो जाती है जब ये सितारे उसके लिए, उसके साथ नाचते हैं। गीत की पंक्ति गूँज़ती है 'जियो मोर, माँगे मोर'।[26] इसी प्रचार अभियान के दूसरे विज्ञापन में हम ग्रामीण बालकों को सचिन तेंदुलकर का सपना देखता हुआ पाते हैं (बेशक सामाजिक-आर्थिक गतिमयता की सपनीली राहों में एक क्रिकेट भी है) और इसी बीच एक जंग खायी साइकिल पर जंग लगे एक डिब्बे में हम पेप्सी की बोतलों को आता हुआ देखते हैं... मतलब शोख़ और चटक रंगों के झरोखे से देखा गया एक 'पिछड़ा' गँवई भारत। लोकगीतों के गायक की खुरदरी आवाज़ और एकतारे की मनमोहक धुन पर गीत बजता है, जिसकी पंक्तियों में 'प्यास' आता है, जो शीतल पेय की चाहत के अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है साथ ही एक बेहतर, अबाधित और अनवरुद्ध जीवन के लिए भी।

> अहे, घुमड़-घुमड़ कर! घुमड़ घुमड़ कर जिया गरज़े, दिल ये बोले, झूम के बोले, तारे झूमे, प्यास बड़ी है और भी बढ़ा ले उसे, खोल के बंधन, तोड़ के ताले ये दिल माँगे मोर!।[27]

हालाँकि तकनीकी तौर पर दोनों विज्ञापन हिंदी में हैं लेकिन हिंग्लिश की कैचलाइन हिंग्लिश से जुड़े तेवर और त्वरा का संकेत देने के लिए पर्याप्त है। साथ ही, आकांक्षाओं से भरी जीवन-शैली रूपायित करने वाली विज्ञापन एजेंसियाँ अपने लक्षित दर्शक/श्रोता समूह को लेकर, जिसे उम्र, लिंग, आर्थिक शक्ति और भाषा (ईमटी बनाम वीएमटी/एचएमटी या वर्नाकुलर-या हिंदी मीडियम टाइप जैसे संक्षिप्त पद ख़ूब प्रचलित हैं) के आधार पर परिभाषित किया जाता है, अत्यंत सजग हैं और उस

---

[25] निजी संवाद, नयी दिल्ली, 28.8.2014.

[26] देखें, http://www.youtube.com/watch?v=Aog_A-lqlay&feature=related (अंतिम बार प्राप्त करने की तिथि 24.7.2014).

[27] http://www.youtube.com/watch?v=WMzZfzzG}®s&feature=related (अंतिम बार प्राप्त करने की तिथि 24.7.2014).सभी बच्चे सचिन तेंदुलकर का मुखौटा लगाते हैं और आख़िर में इन्हीं बच्चों में से एक के पीछे असली सचिन तेंदुलकर दिखाई देते हैं.

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 524

पर काम करते हैं, और इस तरह उन्हीं पदानुक्रम और विभेदों का पुनर्सजन करते हैं जिन्हें ज़ाहिरा तौर पर वे मिटा भी रहे हैं। *ज़ोया फ़ैक्टर* नाम के उपन्यास की नायिका और ऐडवर्टाइज़िंग एग्ज़िक्यूटिव ज़ोया जूनियर मैक्सीमिल्क के ऐड पर नौक-भौं सिकोड़ती है जिसका लक्ष्य-श्रोता 'सामाजिक-आर्थिक श्रेणी बी+(शिक्षा स्नातक, पारिवारिक आय प्रतिमाह 30 हज़ार रुपये या इससे कम, पसंदीदा भाषा हिंदी)' का है। यहाँ तक कि फ़्यूचर ब्रांड्स इण्डिया लिमिटेड के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्याधिशासी संतोष देसाई जैसे हमदर्द पेशेवर, जिनका विश्वास है कि 'विज्ञापन एक ताक़तवर भूमिका निभा सकते हैं बशर्ते वे आकांक्षाओं की एक ऐसी सीढ़ी तैयार करें जो उपभोक्ताओं से जीवन में लगातार ऊपर चढ़ते रहने के लिए कहे', ध्यान दिलाते हैं कि कम आमदनी वाला वर्ग विज्ञापनों से या तो ग़ायब है या फिर उसे विद्रूप की तरह पेश किया जाता है :

> आख़िरी बार आपने विज्ञापनों में कब कोई ऐसा गाँव देखा जिसे पर्यटकों के लिए बनाई गयी विवरणिका से नहीं लिया गया हो? चंद उदाहरणों को छोड़ दें तो विज्ञापन-जगत भारत के वृहतर हिस्से को उपभोक्ता के मानस-पटल से बाहर ही रखता है। यह बात विशेष रूप से ग्रामीण भारत को लेकर सच है लेकिन विशालतम बाज़ार के उन उपभोक्ताओं पर भी लागू होती है जो क्रय-शक्ति के लिहाज़ से निचले पायदान पर हैं।
>
> विज्ञापनों में जब इन्हें दिखाया जाता है तो वह अक्सरो-बेशतर बाक़ी लोगों के मनोरंजन के लिए एक विद्रूप के तौर पर होता है। विज्ञापनी परिदृश्य इस क़दर महानगरमुखी है कि लखनऊ को छोटा शहर बताया जाता है और उसे ओछा माना जाता है। 'हम बनाम वे' की मानसिकता बहुत गहरे पैबस्त है और 'उन जैसे लोगों' से संवाद अमूमन अभिभावकीय भाव-मुद्रा के साथ होता है या फिर रूढ़-छवियों के दायरे में अथवा उसमें ये दोनों ही बातें होती हैं।[28]

देसाई विज्ञापन-कर्म को एक वृहत्तर विमर्श के हिस्से के रूप में देखते हैं जिसमें 'सिनेमा और न्यूज़ मीडिया भी शामिल है जहाँ समृद्ध जन हमारे विश्व की धुरी बन बैठे हैं'[29] और जहाँ हमारे सार्वजनिक विमर्श में 'साधारण जन' की परिभाषा कम से कम अंग्रेज़ी में बड़ी तेज़ी से ऊपर की ओर उठी है। विज्ञापन-कर्म और इसके भीतर हिंग्लिश की भूमिका भले उदारीकरण के बाद वाले मध्यवर्ग की आकांक्षाओं, गतिमयता और आत्मविश्वास वाले प्रभुत्वपरक विमर्श को रूपायित करती हो, लेकिन कुछ और दायरे इससे एक अलग ही तस्वीर पेश करते हैं और गतिशीलता तथा समावेशन की गर्जना वाले विजयी विमर्श को प्रश्नांकित करते हैं।

न्यूज़-मीडिया और राजनीति

हिंदी और अंग्रेज़ी की पत्रकारिता के बीच चला आ रहा 'परम्परागत' पदानुक्रम सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पूँजी के लिहाज़ से समाप्त नहीं हुआ है (जहाँ कोई समूह हिंदी और अंग्रेज़ी के अख़बारों का एक साथ मालिक है वहाँ इसे विशेष रूप से देखा जा सकता है), तो भी हिंदी न्यूज़मीडिया में आयी तेज़ उछाल जिसे रॉबिन जेफ़्री[30] ने 'समाचारपत्रों की क्रांति' का नाम दिया है और जिसमें *एनडीटीवी* तथा *आजतक* जैसे टीवी न्यूज़ चैनल भी शामिल हैं, ने हिंदी को बड़ा खिलाड़ी बना दिया है।[31] *पीपली लाइव* नाम की फ़िल्म (2010)में हिंदी पत्रकार दीपक कहता है... '(अंग्रेज़ी के

---

[28] संतोष देसाई (2010).

[29] वही. जैसा कि पत्रकार पी साइनाथ का कहना है, 'मीडिया के नेतृवर्ग के आर्थिक गुणा-भाग में साधारण आदमी की ज़िंदगी कोई मायने नहीं रखती क्योंकि वे लोग उन उत्पादों को नहीं ख़रीद सकते जिन्हें ये महानुभाव बेचते हैं.' नीरोज गेस्ट, http://www.youtube.com /watch?v=yq{mzNgrCJs, 17.3.2012 को प्राप्त.

[30] रोबिन जेफ़्री (2000).

[31] सेवंती नैनन (2007). प्रसिद्ध है कि बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव अंग्रेज़ी अख़बारों में छपी अपनी आलोचना की चिंता नहीं करते थे लेकिन इतना ज़रूर चाहते थे कि उनकी तस्वीर खींची जाए : वे कहते थे कि उनका पाठक अंग्रेज़ी तो नहीं पढ़ सकता लेकिन उनकी छपी हुई तस्वीर ज़रूर देख सकता है.

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 525

समाचार) कौन देखता है? हम ही असली पत्रकार हैं जो जनता की नब्ज़ पकड़ते हैं।'

हिंदी मीडिया में आयी इस उछाल का मीडिया की भाषा-नीति पर असर हुआ है। हिंदी के अख़बार बीते वक़्त में संस्कृतनिष्ठ शब्दों के नवप्रयोग में सफल रहे थे, लेकिन हाल के समय में अख़बार इस बहस में उलझे कि हिंग्लिश को स्वीकार किया जाए या नहीं और मौजूदा अंग्रेज़ी शब्दों को देवनागरी लिपि में लिखकर चलाया जाए कि नहीं। यह बात विशेष रूप से *टाइम्स ऑफ़ इण्डिया* समूह के अख़बार *नवभारत टाइम्स* के बारे में सही है। *टाइम्स ऑफ़ इण्डिया* के राहुल कंसल बताते हैं कि हमने, 'अपने हिंदी के सम्पादकों को कहा कि अंग्रेज़ी के जितने शब्दों का प्रयोग पाठक करते हैं आप उतने शब्दों का प्रयोग कीजिए— और इससे मदद मिली'।[32] भारत सरकार के टेलीविज़न दूरदर्शन की भयाक्रांत करने वाली शुद्ध हिंदी, जिसका बीते वक़्त में यह कह कर मज़ाक़ बना था कि उसे हिंदी में उच्च-शिक्षा प्राप्त करने वाले के सिवाय कोई नहीं समझता, अब ख़ुद दूरदर्शन पर भी अतीत की बात बन चुकी है। 'समाचार पत्रों की क्रांति' का एक हिस्सा टेब्लॉयड न्यूज़ सप्लीमेंट्स की बढ़ोतरी से जुड़ा है जिसमें बॉलीवुड और टेलीविज़नी पर्दे के सितारों की ज़ोरदार कवरेज होती है। इसमें तर्ज़े-बयाँ के रूप में फ़िल्मी गॉसिप के उस पुराने रूप को अपना लिया गया है जिसने हिंग्लिश की राह खोली।[33] हिंग्लिश अख़बार *आई-नेक्स्ट* जैसे प्रयोग भी हुए हैं जो कि मूलत: हिंदी का अख़बार है लेकिन उसमें बहुत सारे अंग्रेज़ी के शीर्षक देवनागरी या रोमन लिपि में लिखे होते हैं।

विज्ञापनी परिदृश्य इस क़दर महानगरमुखी है कि लखनऊ को छोटा शहर बताया जाता है और उसे ओछा माना जाता है। 'हम बनाम वे' की मानसिकता बहुत गहरे पैबस्त है और 'उन जैसे लोगों' से संवाद अमूमन अभिभावकीय भाव-मुद्रा के साथ होता है या फिर रूढ़-छवियों के दायरे में अथवा उसमें ये दोनों ही बातें होती हैं।

हिंदी अख़बारों और न्यूज़ चैनल की क्रांति को क्षेत्रीय पार्टियों के उदय और निचली जातियों के राजनीतीकरण से जोड़कर देखा जाना चाहिए। इससे एक दिलचस्प तनाव पैदा होता है: यों कि टीवी न्यूज़ चैनल पर ज़्यादातर महानगर केंद्रित परिप्रेक्ष्य से समाचार देने का आरोप लगाया जा सकता है— अनूषा रिज़वी की फ़िल्म *पीपली लाइव!* की केंद्रीय विषय-वस्तु भी यही है, लेकिन ऊपर उद्धृत संतोष देसाई की आलोचना की टेक पर यह भी कहा जा सकता है कि हिंदी के अख़बार और मेरठ के *सिटी हलचल* जैसे स्थानीय केबल टीवी न्यूज़ चैनल ने बड़े ज़ोरदार ढंग से स्थानीय और इलाक़ाई समाचारों को केंद्र में रखा है। मायने यह कि छोटे शहर और ग्रामीण भारत हिंदी फ़िल्मों और विज्ञापनों में मुख्य रूप से एक पृष्ठभूमि के तौर पर आता है जिससे महानगरीय युवाओं की हिंग्लिश ज़ुबान बोलने वाले मियाँ मिट्ठू कन्नी काट लेते हैं, लेकिन स्थानीय अख़बारों और टीवी चैनलों के पत्रकार (तथा राजनेता) एक अलग तरह की हिंग्लिश बोलते हैं, जिसका साँचा ठेठ हिंदी का होता है, भले ही उसमें अंग्रेज़ी के ढेर सारे शब्द हों।

भाषाई कौशल और वाग्मिता कौशल निश्चित ही राजनीति के लिए महत्त्वपूर्ण है। उत्तर भारत में 1920 के दशक में चुनावी राजनीति की शुरुआत के समय से ही राजनेता के लिए हिंदी बोलने की

---

[32] देखें, राहुल कंसल (2011) : 206; यह भी देखें, एसओएएस/सराय, नयी दिल्ली की हिंग्लिश कार्यशाला में रोहित प्रकाश की प्रस्तुति 'रीमिक्स के दौर में हिंदी'. यह लिंक http://sarai.net/hinglish-workshop-18-19-august-2014-recordings/, पर मौजूद है. (लिंक प्राप्ति की तिथि 30.1.2015).

[33] राधिका परमेश्वरन (2012).

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 526

अंग्रेज़ी को निश्चित ही यह मानकर अपनाया जाता है कि ज्ञानकर्म से जुड़े पेशेवरों या अच्छी नौकरी चाहने वाले किसी व्यक्ति की सफलता के लिए यह ज़रूरी है। यह भी एक वजह है कि छोटे शहरों और महानगरीय केंद्रों में व्यक्तित्व-विकास के पाठ्यक्रमों के साथ-साथ (और बहुधा समानार्थक भी ?) निजी इंग्लिश-स्पीकिंग कोर्स की भरमार है।

क्षमता एक अनिवार्यता रही है, हालाँकि सिर्फ़ हिंदी जानना राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में एक बाधा है। यह एक ऐसा विषय है जो ज़्यादा व्यवस्थित अनुसंधान की माँग करता है, लेकिन हम यह कहते हुए शुरुआत कर सकते हैं कि एक बुनियादी स्तर का हिंग्लिश संकेत-परिवर्तन और संकेत-मिश्रण उत्तर भारत की राजनीति का मुख्य आधार बन चला है[34]। तो भी अगर हम बोलने के लहज़े, प्रवाह और वाग्मितापरक कौशल की तरफ़ ध्यान दें तो बड़े मुख़्तलिफ़ क़िस्म की हिंग्लिश और द्विभाषिकता को उभरता हुआ पायेंगे जिसकी वजह सिर्फ़ राजनेता की पृष्ठभूमि और शिक्षा भर नहीं बल्कि जिसका एक उद्देश्य मतदाताओं तक ख़ास संकेत को पहुँचाना भी है।

जैसे, हिंदी भाषी राज्य उत्तर प्रदेश में 2012 के चुनावों में दो 'युवा' नेता चुनावी अखाड़े में एक दूसरे से भिड़े। राहुल गाँधी ने, जो कि ज़ाहिरा तौर पर शहराती हैं और अंग्रेज़ी बोलना जिनके लिए कहीं ज़्यादा सहज है, अपने को जड़ों से जुड़ा और स्थानीय मतदाताओं के प्रति निष्ठावान जताने का एक बड़ा लेकिन अंतत: विफल प्रयास किया, और सही हिंदी बोलना इस प्रयास का एक हिस्सा था। लेकिन जैसा कि उनके फूलपुर के भाषण से ज़ाहिर होता है, हिंदी बोलने की उनकी क्षमता वाग्मिता के सामर्थ्य में नहीं बदल पाई है।[35] इसके उलट, विजेता अखिलेश यादव, जो अपने परिवार से पहली पीढ़ी के अंग्रेज़ी शिक्षित (और ऑस्ट्रेलिया में पढ़े) हैं, और जो भारी लहजे में गहरे बोलते हैं, अपनी छवि हिंदीभाषी राजनेता के रूप में पेश करने को लेकर सतर्क थे। अंग्रेज़ी और प्रौद्योगिकी शब्दों को लेकर सहज होने के बावजूद वे अपनी अंग्रेज़ी और विदेश में हासिल शिक्षा की बात को दबा कर रखने के लिए बज़िद थे, और टिप्पणीकारों ने माना कि उनका जड़ों से जुड़ा जान पड़ना (जिसकी अभिव्यक्ति हिंदी वाग्मिता की उनकी सहजता में भी हुई) उनके विजयी होने में महत्त्वपूर्ण साबित हुआ।[36] अपने को हमेशा निचली जातियों की जनता (दलित बहुजन) के प्रतिनिधि के रूप में पेश करने वाली और हमेशा स्थानीय लहजे से लबरेज़ हिंदी में बोलने वाली उत्तरप्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने जब अपने साक्षात्कार में कठिनाई के बावजूद बड़ी संख्या में अंग्रेज़ी के शब्दों का प्रयोग किया तो इसका संबंध प्रधानमंत्री पद की उनकी अल्पजीवी दावेदारी से था, यानी इस बात से कि वे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर काम करने में समर्थ हैं।[37]

ऐसे में बाक़ी दायरों से तुलना करें तो उदारीकरण के बाद के समय में न्यूज़ मीडिया और राजनीति का दायरा हिंदी और क्षेत्रीय जड़ों के पल्लवन को महत्त्व देता जान पड़ता है और हिंदी नहीं बल्कि अंग्रेज़ी लहजे को एक बाधा के रूप देखता है। इस रुझान को हाल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से एक झटका मिला। उन्होंने अपने मंत्रियों से यथासम्भव जन-सामान्य के बीच हिंदी में बोलने के निर्देश

---

[34] 'महिला आरक्षण विधेयक पर संसद में बहस करने वाले राजनेता जिस भी भाषा के चैनल को अपनी साउंड बाइट दे रहे हों अपनी बात में आगे या पीछे अंग्रेज़ी जोड़ते थे- 'लेट मी टेल यू कि इसका कोई ईजी सॉल्यूशन नहीं है !', मोहन (2010).

[35] देखें, यूट्यूब पर उनका भाषण http://www.youtube.com/watch?v=t3UC8FJ5n10 (लिंक प्राप्ति की तिथि 23.7.2014)

[36] देखें http://www.youtube.com/watch?v=TIiRIoyjfzY&feature=relmfu (लिंक प्राप्ति की तिथि 23.7. 2014).

[37] देखें, *वॉक द टॉक* शो में साक्षात्कार, https://www.youtube.com/watch?v=viNUEB|Bzdo (लिंक प्राप्ति 23.7.2014).

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 527

दिये, हालाँकि एक टिप्पणीकार ने यह भी ध्यान दिलाया है कि 2014 में स्वतंत्रता दिवस पर अपने लाल क़िले के भाषण में अपनी सांस्कृतिक पहचान पर ज़ोर देने के रज़ से वे पहले दस मिनट तक सिर्फ़ हिंदी में बोलते रहे, लेकिन इसके बाद वे हिंग्लिश की उक्तियों और नारों की तरफ़ मुड़े जब उन्होंने आर्थिक विकास की बात की।[38] अंग्रेज़ी के न्यूज़ टीवी चैनल हिंदीभाषी राजनेताओं के बयान का अब भाषांतर नहीं करते और यही बात हिंदी के टीवी न्यूज़ के लिए भी सही है जिसमें बयान अंग्रेज़ी में दिखाए-सुनाए जाते हैं, जो कि साफ़ संकेत करता है कि अन्य भाषा को लेकर दर्शक की समझ और सहिष्णुता किस तरह बदली है।

इसके साथ ही साथ एक बात यह भी है कि राजनीति और न्यूज़मीडिया वे दायरे भी हैं जहाँ हिंदी बनाम अंग्रेज़ी की बहस बीच-बीच में उठती रहती है जिसमें अंग्रेज़ी के विशेषाधिकार और सामाजिक अपवर्जन के विरुद्ध या फिर हिंदी के ज़रा-जीर्ण होने और उसे अनुचित ढंग से लादने को लेकर तथा अंग्रेज़ी के व्यावहारिक फ़ायदे या हिंदी की पहुँच और सामाजिक समावेशिकता को लेकर ख़ूब सुथरे और वैध तर्क दिए जाते हैं।[39]

कार्यस्थल पर हिंग्लिश

सूचना प्रौद्योगिकी और वैश्वीकरण की उछाल वाले इस दौर में अंग्रेज़ी को निश्चित ही यह मानकर अपनाया जाता है कि ज्ञानकर्म से जुड़े पेशेवरों या अच्छी नौकरी चाहने वाले किसी व्यक्ति की सफलता के लिए यह ज़रूरी है।[40] यह भी एक वजह है कि छोटे शहरों और महानगरीय केंद्रों में व्यक्तित्व-विकास के पाठ्यक्रमों के साथ-साथ (और बहुधा समानार्थक भी ?) निजी इंग्लिश-स्पीकिंग कोर्स की भरमार है। इनका उद्देश्य बोलने की कौशल में सुधार भर नहीं, बल्कि आत्म-विश्वास बढ़ाना-बनाना भी होता है।[41] एक पीढ़ी पहले तक जिन समूहों ने कल्पना भी न की होगी उसके लिए भी पेशेवर सफलता और सामाजिक गतिमयता की कुंजी के रूप में यह माहौल अंग्रेज़ी में गहन निवेश का है। ऐसे माहौल में हिंग्लिश क्या भूमिका निभाती है? कार्यस्थल लबो-लहजा और शब्दक्षमता पर विशेष ध्यान न देते हुए किस सीमा तक अपेक्षाकृत ज़्यादा समावेशी बने हैं?[42] कार्यस्थल पर हिंग्लिश की मौजूदगी और उसके उपयोग के अध्ययन का अर्थ है न सिर्फ़ कर्मचारी के कार्यस्थलीय व्यवहारों को ध्यान में रखना बल्कि नयी अर्थव्यवस्था के भीतर कामगारों के प्रबंधन से जुड़े भाषाई पहलू पर भी ध्यान देना।

बड़ी कम्पनियों के अंग्रेज़ी भाषी पेशेवर कार्यस्थलों पर हिंग्लिश केवल अनौपचारिकता का संकेतक है।[43] सूचना प्रौद्योगिकी के निचले हिस्से में भाषा कर्मचारियों के प्रबंधन का एक हिस्सा बन

---

[38] अपूर्वानंद, 'लैंग्वेज स्ट्रैटजी इन पॉलिटिकल स्पीच', *सराय हिंग्लिश कार्यशाला,* http://sarai.net/hinglish-workshop-v}-v~-august-w®vy-recordings/, *पर उपलब्ध, लिंक प्राप्ति तिथि* 20.1.2015.

[39] देखें, ऊपर की पाद-टिप्पणी संख्या-8.

[40] कैरोल उपाध्याय और ए. आर. वासवी (सम्पा.)(2008).

[41] बहुत से अख़बारी लेख है, मिसाल के लिए देखें, कुमार (2014). कुमार लिखते हैं कि ये 'कोचिंग क्लास हैं जो ज़्यादातर दो या तीन महीने के लिए बोलचाल की अंग्रेज़ी के तुरंता पाठ्यक्रम चलाते हैं. मज़ेदार बात यह है कि देसी भाषाओं के माध्यम से शिक्षा देने वाले स्कूलों में पढ़े लोग ही नहीं बल्कि अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षा देने वाले स्कूलों में पढ़े लोग भी इसमें दाख़िला ले रहे हैं. ब्रिटिश इण्डिया के निदेशक किशोर कुमार बनर्जी इस रुझान की व्याख्या करते हुए बताते हैं कि, 'चूंकि आईआईएम-रांची, बीआईटी-मेसरा सरीखे प्रबंधन के शीर्ष संस्थानों में धाराप्रवाह अंग्रेज़ी बोलने वाले छात्र महानगरों से आ रहे हैं इसलिए स्थानीय छात्र प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिए अपना संवाद-कौशल मांजने को लेकर सतर्क हो गये हैं'. गांगुली-स्क्रेज और स्क्रेज (2009) में कोलकाता के मध्यवर्ग की यह चिंता दर्ज मिलती है कि बांग्ला भाषा पर गर्व करने की पुरानी रिवायत से नयी पीढ़ी के पेशेवर के सामने अवसरों का टोटा पड़ रहा है.

[42] देखें, प्रशांत पांडेय. आज कार्यस्थल कहीं ज़्यादा समताकारी हो चला है— आप किस सामाजिक संस्तर से आते हैं, यह बहुत मायने नहीं रखता. सही हुनर और अनुकूल प्रवृति है तो आप किसी भी क्षेत्र में अपना योगदान कर सकते हैं.' (उपर्युक्त पाद-टिप्पणी संख्या-4).

[43] 'उनके लिए हिंग्लिश ऑफ़िस के औपचारिक परिवेश को बदलने में मदद देता है और ऑफ़िस की उबाऊ बातचीत को कहीं ज़्यादा मिर्च-मसालेदार और चटखार बनाता है. इंजीनियर अमित शर्मा बताते हैं कि 'ऑफ़िस में मेरा सामान्य दिन सिर्फ़ काम, काम और काम से भरा रहता है...फिर देर रात की खटनी...ये सारी बातें ज़िंदगी को बहुत कठिन बना सकती हैं. इसलिए हम सभी सहकर्मी यथासम्भव ऑफ़िस

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 528

जाती है। बीपीओ (मिसाल के लिए कॉल सेंटर) की नौकरी के लिए, भाषा और लहजे की कोचिंग कर्मचारियों के प्रशिक्षण का नियमित और महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, ख़ासकर यह देखते हुए कि कर्मचारियों की संख्या बहुत ज़्यादा है।[44] मायने यह कि हिंग्लिश के विजयघोषी विमर्श में हिंग्लिश को भारतीय तर्ज़ की अंग्रेज़ी का जामा पहनाया जाता है और इसे अंग्रेज़ी की एक ऐसी क़िस्म बताया जाता है जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वही वैधता अख़्तियार करेगी जो कि अमेरिकन अंग्रेज़ी और ब्रिटिश अंग्रेज़ी ने हासिल की है, वहीं बीपीओ कम्पनियों में हिंग्लिश को एक ऐसी बाधा के रूप में देखा जाता है जिससे पार पाना ज़रूरी है। बीपीओ में हिंग्लिश और हिंदी/भारतीय भाषाएँ सिर्फ़ 'दबी-छुपी ज़ुबान'[45] हो सकती हैं। लेकिन ए.आर. वासवी [46] के अनुसार सूचना प्रौद्योगिकी के कार्यस्थल पर वैसे कर्मचारियों के बीच, जो अक्सरो-बेश्तर युवा हैं और जो (उच्च) शिक्षा, योग्यता और उपभोग की आदतों के ज़रिये अन्य कर्मचारियों से अपने को अलग जताना चाहते हैं और अपने काम की परिभाषा शिक्षा और मनोरंजन के रूप में करते हैं, वहाँ भोजन और वस्त्र जैसे उपभोक्तावादी युवा-संस्कृति के अन्य पहलुओं के साथ हिंग्लिश की पकड़ ज़्यादा मज़बूत है।

साथ ही जैसा कि विद्वानों ने ध्यान दिलाया है, अन्य जगहों की तरह भारत में भी रोज़गार की बढ़ोतरी का सबसे बड़ा दायरा अर्थव्यवस्था के अनियोजित क्षेत्र के निचले हिस्से- मेंटेनेंस (रखरखाव), सिक्युरिटी (सुरक्षा), केटरिंग (खानपान), क्लीनिंग (साफ़-सफ़ाई) आदि में खुला है।[47] ठोस अनुसंधान की ज़रूरत तो अब भी बनी हुई है लेकिन अनौपचारिक जाँच-परख से ये संकेत मिलते हैं कि पोशाक (यूनिफ़ॉर्म), शिष्टाचार और तौर-तरीक़े के साथ-साथ बुनियादी अंग्रेज़ी/हिंग्लिश इस क्षेत्र में प्रशिक्षण और (निगरानी युक्त) कामकाज का ज़रूरी हिस्सा है। हिंग्लिश शॉपिंग मॉल तथा फ़ाटकबंद घरों में रहने वाले समूहों में आवाजाही करने वाले बहुविध वर्गों तथा जो इन मॉलों और घरों की साफ़-सफ़ाई या सुरक्षा के लिए तैनात होते हैं उनके बीच संवाद को सम्भव तो बनाती है लेकिन भाषाई दक्षता मौजूदा वर्गों की आर्थिक और सामाजिक खाई को शायद ही पाट सकती है। अंग्रेज़ी /हिंग्लिश में कमज़ोरी को सम्पन्न शहरी/उपभोक्ता कम अक़्ल होने का लक्षण मानते हैं और इस बात का भी संकेत कि 'ये लोग', 'हम जैसे' नहीं हैं।[48] यहाँ अंग्रेज़ी समाजार्थिक गतिशीलता की भाषा के रूप में कम और दासत्व की भाषा के रूप में ज़्यादा काम करती है।

शैक्षिक और कॉलेज की ज़िंदगी

सामाजिक गतिशीलता की आकांक्षा और सामाजिक भेद के पुनरुत्पादन, दोनों ही नुक़्तों से शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। मोटा-मोटी यह क्षेत्र 'निजी' और 'सरकारी' स्कूल तथा अंग्रेज़ी और हिंदी माध्यम के स्कूलों से ध्वनित होने वाली सामाजिक गतिशीलता या सामाजिक विभेद के समकक्ष है, हालाँकि

के माहौल को तनाव-मुक्त बनाये रखने की कोशिश करते हैं और एक ऐसी भाषा में बात करते हैं जो मज़ेदार, युवा-ऊर्जा से भरी और बिल्कुल 'हटके' हो, जैसे कि हिंग्लिश जो बहुत मदद करती है'; सुजाता चौधरी, 2008.

[44] नोफ़िल, 'हिंग्लिश, ए स्ट्रिक्ट नो नो इन बीपीओज़!', इंडियन एक्सप्रेस, 13.5.2010, http://www.hindustantimes.com/india-news/hinglish-a-strict-no-no-in-bpos/article-542998}.aspx, पर उपलब्ध. (लिंक प्राप्ति की तिथि 31.1.2015).

[45] माथंगी कृष्णमूर्ति (2011) : 82-97.

[46] कैरोल उपाध्याय एवं ए. आर. वासवी (सम्पा.) (2008),

[47] जैसा कि नंदिनी गुप्तु (2013,11) का कहना है : 'शहरी इलाक़े में निजी अस्पतालों, शिक्षा संस्थानों, आराम और मनोरंजन के ठीहों, होटल और मेज़बानी उद्योग, बड़े पैमाने के संगठित रिटेल आउटलेट तथा शॉपिंग मॉल की अप्रत्याशित वृद्धि हुई है. इन विशाल निजी सम्पत्तियों के रख-रखाव, साफ़-सफ़ाई, खानपान तथा देखरेख और साथ ही इन स्थानों, इनके मालिकान और उपभोक्ताओं की संरक्षा, बचाव और सुरक्षा की ज़रूरत के कारण उचित प्रशिक्षण प्राप्त कामगरों की मांग में तेज़ी से बढ़ोतरी हुई है और शहरी अनियोजित क्षेत्र के निचले स्तर पर होने वाले काम की प्रकृति में बुनियादी बदलाव आया है'.

[48] नंदिनी गुप्तु, निजी संवाद, 25.7. 2012.

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 529

शिक्षा की गुणवत्ता और स्तरीकरण के मामले में दोनों ही तरह के स्कूलों के पर्याप्त भेद मिलते हैं।[49] शिक्षाविद् कृष्ण कुमार ने अक्सर ध्यान दिलाया है कि औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था की प्रत्यक्ष विरासत वाले इस दुतल्ले तंत्र में हिंदी माध्यम की शिक्षा को कोई अलग परियोजना नहीं बल्कि अंग्रेज़ी शिक्षा का 'सस्ता संस्करण' समझा जाता है। ज्ञान के औपनिवेशिक (और उत्तर-औपनिवेशिक) संगठनों की बदौलत ज्ञान अंग्रेज़ी से देसी भाषाओं की ओर संचरित होता है और शिक्षक तथा छात्र हमेशा शिकायत करते हैं कि पाठ्य पुस्तक का अंग्रेज़ी से हिंदी में किया गया अनुवाद घटिया है। नतीजतन दो तरह की शिक्षा में आधारभूत समानता होने के बावजूद भाषाई विभेद बचपन से ही लोगों को दो अलग-अलग दुनिया के बाशिंदे बना डालता है। परस्पर अलग यह दो दुनिया माहौल, सांस्कृतिक प्रतीक और स्कूलों के बरताव तथा स्कूलों को घेरने वाले परिवेश में घुले 'सामान्य ज्ञान' के कारण वर्गीय चेतना का रूप ले लेती है।[50] सार्विक प्राथमिक शिक्षा में निवेश की विफलता को आज़ाद भारत की सबसे बड़ी ग़लतियों में गिना जा सकता है लेकिन बीसवीं सदी के आख़िरी दशक और उसके बाद दो बातें लक्ष्य की जा सकती हैं। एक तो यह कि ग्रामीण इलाक़े में बुनियादी स्तर की साक्षरता और प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्य को हासिल करने के सरकारी प्रयास नये सिरे से तेज़ हुए हैं और ग़रीब लोगों के बीच भी अंग्रेज़ी माध्यम के प्राइवेट स्कूलों की माँग में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है[51] जिससे सरकारी स्कूलों की माँग घटी है। बच्चे के सीखने की प्रक्रिया (जिसमें भाषा सीखना भी शामिल है) में प्राथमिक भाषा में शुरुआती शिक्षा देना फ़ायदेमंद है— यह बात भारतीय शिक्षाविद बहुत पहले से अपने अध्ययनों में बताते रहे हैं। इसके बावजूद यह आम धारणा मज़बूत होती आ रही है कि अंग्रेज़ी बोलने वालों के नक्षत्रमण्डल में शामिल होने और उन अवसरों तक पहुँच बनाने के लिए जो उन्हें हासिल हैं किसी बच्चे के लिए यथासम्भव छुटपन से ही अंग्रेज़ी सीखना ज़रूरी है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कई स्कूलों में बलपूर्वक एक नियम लागू किया जाता है कि प्री-स्कूल और प्राथमिक स्कूल के परिसर में अपनी प्राथमिक भाषा में बोलना मना है ताकि प्राथमिक भाषा के हस्तक्षेप से बचा जा सके। अंग्रेज़ी माध्यम के निजी स्कूलों की बाढ़ और प्राथमिक भाषा के कौशल को ओछा ठहराते हुए मात्र अंग्रेज़ी में प्रवीणता पर ज़ोर देने के दो प्रत्यक्ष परिणाम सामने आये हैं। एक तो कम गुणवत्ता के शिक्षण और

ज्ञान अंग्रेज़ी से देसी भाषाओं की ओर संचरित होता है और शिक्षक तथा छात्र हमेशा शिकायत करते हैं कि पाठ्य पुस्तक का अंग्रेज़ी से हिंदी में किया गया अनुवाद घटिया है। नतीजतन दो तरह की शिक्षा में आधारभूत समानता होने के बावजूद भाषाई विभेद बचपन से ही लोगों को दो अलग-अलग दुनिया के बाशिंदे बना डालता है।

---

[49] ला डूसा (2014).

[50] कृष्ण कुमार (2001) : 1-7. कृष्ण कुमार का कहना है, 'हिंदी माध्यम का स्कूली छात्र बड़ी तेज़ी से इस बात को समझ लेता है कि उसके ज्ञान का स्रोत अनुवाद है और मूल पुस्तक अंग्रेज़ी में लिखी हुई है; मिसाल के लिए अंकगणित और विज्ञान की पुस्तकें जिनमें शब्दावली इतनी बनावटी होती है कि हिंदी के शब्दों को समझने के लिए अंग्रेज़ी का शब्द जानना पड़ता है. छात्र का ज्ञान के एक ऐसे संसार में समाजीकरण होता है जो असमानताओं/असंतुलनों से भरा हुआ है और जो आत्म-विश्वास की कमी पैदा करता है. जहाँ अंग्रेज़ी माध्यम का स्कूली छात्र ज्ञान का एक सामंजस्यपूर्ण संसार देखता है और प्रशंसा तथा सामाजिक सम्मान के ज़रिये आत्मविश्वास हासिल करता है, अनुवाद की शुरुआती पीड़ा को सह लेने के बाद उसका संसार एक बड़ा, अंतर्राष्ट्रीय संसार बन जाता है (भले ही उसके वास्तविक संसाधन सीमित हों), वहीं हिंदी माध्यम के स्कूली छात्र का संसार सिकुड़ जाता है वह अपने सीमित संसार को राष्ट्रवाद की झालर से ढकता है. (2001,अंग्रेज़ी में अनुवाद मेरा); हाल के अध्ययनों के लिए ला डूसा (2014) और रामनाथन (2005) को भी देखें.

[51] रामालिंगम (2009).

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 530

स्वयं शिक्षक के प्रवीण न होने के कारण अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूलों में छात्र की अंग्रेज़ी की क्षमता सीमित होती है; और दूसरे, अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूलों में छात्र की अपनी प्राथमिक भाषा में लिखने और पढ़ने का सामर्थ्य कम हो जाता है। यह सब कुछ इतना प्रकट है कि प्रवासी समुदायों से लेकर भारत के भीतर मौजूद भारतीय स्कूली बच्चों के ऊपर भाषाई विचलन की कई मिसालों को लागू किया जा सकता है।[52] नतीजतन, अंग्रेज़ी शिक्षित बच्चों में हिंदी में लिखने-पढ़ने की क्षमता कार्य साधकता या कामचलाऊपन तक सीमित हो जाती है।

अंग्रेज़ी के औपचारिक प्रवर्तन और इससे जुड़ी महत्त्वाकांक्षा की इस पृष्ठभूमि के भीतर हिंग्लिश शिक्षा और स्कूली तथा कॉलेजिया ज़िंदगी में 'दबी-छुपी बोली' और अनिवार्य सेतुबंध दोनों ही रूपों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है और अनौपचारिक तथा समावेशी भाषाई पहचान के रूप में भी महत्त्वपूर्ण होती है। कॉलेज में पढ़ाने वाले कई शिक्षक स्वीकार करते हैं कि अंग्रेज़ी माध्यम की शिक्षा प्राप्त छात्रों को पढ़ाने के लिए अंग्रेज़ी और हिंदी का मिश्रण करना एक व्यवाहारिक ज़रूरत है और बुनियादी किताबों के हिंदी अनुवाद के अभाव में ख़ुद अपने लिए शिक्षण सामग्री तैयार करने के लिहाज़ से भी हिंदी और अंग्रेज़ी का मिश्रण एक व्याहारिक ज़रूरत है।[53] कॉलेज के शिक्षक ही नहीं, वे लोग भी जो इस बात को लेकर फ़िक्रमंद हैं कि हिंग्लिश और द्विभाषिक वाचन-सामर्थ्य में बढ़ती के कारण दोनों में से किसी भी एक भाषा में पूर्ण शब्दावली तैयार नहीं होगी, यह कहते हैं कि भाषाई मिश्रण के बग़ैर वक्ता का काम नहीं चलने वाला।[54] साथ ही, हिंग्लिश कम से कम महानगरीय केंद्रों में कॉलेज के छात्रों की पंसदीदा भाषा बनकर उभरी है। सम्भवत: उनके लिए हिंग्लिश ने महाविद्यालयी जीवन की भाषा (सोश्योलेक्ट) का दर्जा हासिल कर लिया है।[55] कॉलेज के छात्र हिंग्लिश को अलग-अलग द्विभाषिक सामर्थ्य के साथ विभिन्न क्षेत्रीय पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों को आपस में जोड़ने वाले माध्यम के रूप में देखते हैं और उनको समूहगत पहचान देने वाली भाषा के रूप में भी। श्रेया मुखर्जी का कहना है :

> 'हाँ, यह बात सच है कि जो अच्छी अंग्रेज़ी बोल लेते हैं और जो अच्छी अंग्रेज़ी नहीं बोल पाते उनके बीच एक निश्चित भेद है। बाहर के ज़्यादातर छात्र भाषा को लेकर बहुत सहज नहीं हैं और इस कारण कटा हुआ महसूस करते हैं। मुझे लगता है कि इसी वजह से अंग्रेज़ी का 'भारतकृत' संस्करण इतना लोकप्रिय हुआ है। इसने चीज़ों को ज़्यादा अनौपचारिक बनाने में मदद की है और सामान्य तौर पर हर व्यक्ति को इसके ज़रिये महसूस होता कि मुझे अपना लिया गया है।'
>
> 'मेरा मानना है कि हिंग्लिश के इतने लोकप्रिय होने का कारण उसका अत्यंत 'कमसिन' भाषा होना है. इसमें एक खिलंदड़ाना आवेग है। कॉलेज में हम लोगों में कोई भी समुचित हिंदी या अंग्रेज़ी में नहीं बोलता, हम हमेशा हिंग्लिश बोलना ही पसंद करते हैं और क्यों ना करें? यह सबसे ज़्यादा रचनात्मक और लचीली भाषाओं में एक है। हम रोज़ एक नया शब्द गढ़ लेते हैं और इसमें बहुत मज़ा आता है', चंढ़ीगढ़ के छात्र रमनदीप सिंह ने हँसते हुए बताया।[56]

कॉलेजिया ज़िंदगी और हिंग्लिश के बीच का नज़दीकी रिश्ता महाविद्यालयी पठन-पाठन से जुड़े वेब पर दर्ज हिंग्लिश की कविताओं के साथ-साथ टीवी रिऐलिटी शो जैसे चैनल वी के *डेयर 2 डेट* में हिंग्लिश बोलते कॉलेज के विद्यार्थियों और इस मान्यता से भी ज़ाहिर होता है कि नयी तर्ज़ का

---

[52] पीटर आऊर (1998) : 1-30.

[53] मिश्रा (2011) कहते हैं कि, 'भाषाओं को छोड़कर सभी विषयों के अध्यापक अपनी कक्षा में हिंदी और अंग्रेज़ी के मिश्रित रूप का प्रयोग करते हैं ताकि अलग-अलग पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों को बात समझने में दिक़्क़त न हो.

[54] मिसाल के लिए देखें कोठारी (2011): 194; लेकिन साथ में तृप्ति का ख़बरदार करने वाले अंदाज़ में लिखा गया अख़बारी आलेख (2003) भी देखें : 'शुरुआती उम्र से ही 'हिंग्लिश' के अत्यधिक प्रयोग को अब हकलाने और ध्वनियों के ग़लत उच्चारण जैसे वाचन से जुड़े विकार से सम्बद्ध किया जाता है. 'दोषपूर्ण' द्विभाषिक इस्तेमाल के कारण अच्छी तरह से कह पाने में असमर्थ बच्चे आख़िर को एक स्थिति में आ जाते हैं जहाँ वे ना तो अंग्रेज़ी में निष्णात होते हैं और न ही अपनी मातृभाषा में.

[55] प्रसाद, चंद, सिन्हा एवं कुमारी (2014) तथा किदवई (2014).

[56] चौधरी (2008).

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 531

तनिक 'हटके' सिनेमा जो अक्सर दिल्ली का कथानक (*ओये लक्की लक्की ओये, डेल्ही बेली*) उठाता है और जिसमें हिंग्लिश के संवाद और किरदार के रूप में महानगरीय कॉलेज के छात्र होते हैं, 'यथार्थपरक' हैं और युवजन तथा उनकी भाषा दोनों का 'प्रतिनिधित्व' करता है। जैसा कि हम देख चुके हैं, पेशेवर कार्यस्थलों की हिंग्लिश को भी कॉलेज शिक्षित युवजन के बीच चलने वाली और यारी-दोस्ती तथा मौज-मज़े की भाषा की एक प्रकट निशानी माना जाता है।

फ़िल्म और टेलीविज़न

विज्ञापन-जगत के साथ ही हिंदी सिनेमा भी उन दायरों में शामिल है जिसमें संकेत-परिवर्तन और भाषाई मिश्रण पिछले दशक में सबसे ज़्यादा दिखाई देता है। यह बात अलग है कि हिंदी फ़िल्मों में अंग्रेज़ी के होने का इतिहास बहुत लम्बा है।[57] फ़िलहाल हिंग्लिश के चलन और इसको अपनाने वाली नयी काट की फ़िल्मों को लेकर एक पुरज़ोर बहस चल रही है। सोचा जा रहा है कि इसका फ़िल्म के वितरण से जुड़े आर्थिक पक्ष पर क्या असर होगा। एक समानांतर बहस फ़िल्म संगीत में हिंग्लिश के सौंदर्यशास्त्र को लेकर चल रही है। सिनेमा के संदर्भ में देखें तो हिंग्लिश ऐसी फ़िल्मों का संकेत करती जान पड़ती है जो विशेषत: अंग्रेज़ी (शायद भाषाई मिश्रण वाले कुछ गीतों के साथ) में है और जिसकी कथाभूमि शहरी/महानगरीय और जिसके पात्र युवा हैं (जैसे कि *डेल्ही बेली*)। इससे संकेत मिलते हैं कि हिंग्लिश भाषागत परिभाषा के रूप में कम और स्थानीय संदर्भों के साथ वैश्वीकृत होती युवा-संस्कृति की वृहत्तर सांस्कृतिक आधारभूमि के रूप में कहीं ज़्यादा काम कर रही है।

हिंदी सिनेमा के हिंग्लिश-तर्ज़ को फ़िल्म प्रदर्शन और वितरण की बदलती हुई स्थितियों के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप देखा जाता है। छोटी बजट की कहीं ज़्यादा मौलिक फ़िल्मों के प्रदर्शन के लिए मल्टीप्लेक्सों में जगह मौजूद है और सिनेमा के टिकट की क़ीमतों में बढ़ोतरी के कारण सिनेमा देखना एक हद तक मध्यवर्गीय मामला बन चला है।[58] फ़िल्म-निर्माताओं की एक नयी पौध युवाओं के चिंताजगत की थाह लेना चाहता है और ऐसे हालात का फ़ायदा उठा रहा है। भाषा-भाषियों की बड़ी तादाद इन फ़िल्मों में बोली गयी भाषा और इन फ़िल्मों में चित्रित पात्रों के रंग-ढंग से अपने को जोड़कर देख रही है।[59]

यह भी माना जा रहा है कि फ़िल्मों की हिंग्लिश संवाद-लेखन के एक नये चलन का नतीजा है जिसमें लेखक संवादों को अंग्रेज़ी में लिख कर फिर उनका अनुवाद हिंदी में करने की जगह सीधे हिंग्लिश (मेरे ख़याल से रोमन लिपि में) में लिखता है।[60] जैसा कि अन्ना वेटकैड ने ध्यान दिलाया

---

[57] कोठारी (2011).

[58] एड्रियन ऐथिक (2011) : 147-160.

[59] इंटरटेंमेंट नेटवर्क के ट्रेड एनालिस्ट आमोद मेहरा कहते हैं कि, 'टिकटों की ऊँची क़ीमतों के कारण आज मध्यवर्ग और ग़रीब लोगों ने सिनेमाघरों में जाना तक़रीबन छोड़ दिया है. इसलिए, फ़िल्म का मुख्य दर्शक-वर्ग आज शिक्षित और तरक़्क़ी करता शहराती है. ये लोग हिंग्लिश से अपने को जुड़ा हुआ महसूस करते हैं क्योंकि वे बिल्कुल हिंग्लिश यानी थोड़ी अंग्रेज़ी-थोड़ी हिंदी के फेंटफाट में ही बोलते हैं. इसके अतिरिक्त, वे हिंग्लिश फ़िल्मों के पात्रों के साथ भी गहरा जुड़ाव महसूस करते हैं; मार-धाड़ और हवा-हवाई फ़िल्मों के सर्वशक्तिशाली जान पड़ते पात्र उन्हें अवास्तविक लगते हैं'. लालवाणी (2003).

[60] देखें, अन्ना वेट्टीकेड (2011), 'इन दिनों बॉलीवुड में जिस तरह की भाषा का इस्तेमाल हो रहा है उसमें कोई बात तो हैं. कई बड़ी फ़िल्मों में किरदार उसी तरह हिंदी बोलते हैं जैसा कि वास्तविक ज़िंदगी में भारतीय बोलते हैं—औपचारिक अवसरों पर औपचारिक रूप से और दोस्तों के बीच मनचाहे ढंग से. अगर आपकी जड़ें हिंदी पट्टी में ना हुईं तो आप हिंदी में अपनी मातृभाषा की छौंक लगाते हैं और बोलने में अंग्रेज़ी घुसेड़ते हैं, चाहे आप सरकारी स्कूलों में पढ़े और शहर में पले-बढ़े हों या फिर छोटे शहरों की सड़कों पर नज़र आने वाले शोहदे हों जिनके बोलने का लहजा विदेशी पर्यटकों के साथ बारम्बार होने वाली बातचीत से बनता है. इन दिनों बॉलीवुड के कई लेखक इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कठिन मेहनत कर रहे हैं कि उनके किरदार की हिंदी स्कूली किताबों वाली या अवास्तविक ना जान पड़े. साथ ही यह भी महत्वपूर्ण है कि उनके रचे हिंदी संवाद सीधे-सीधे अंग्रेज़ी में लिखे वाक्यों के अनुवाद नहीं होते और उनके अंग्रेज़ी के संवाद में पश्चिम के धारावाहिकों और फ़िल्मों की बू-बास भी नहीं होती'.

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 532

है, 'यह परिवर्तन पीड़ादायी संक्रमण की कम से कम एक दशक की अवधि से आया है जिसमें बॉलीवुड फ़िल्मों के पात्र पहले एक वाक्य अंग्रेज़ी में बोल रहे थे और फिर तुरंत बाद उसका अनुवाद हिंदी में करते थे जिससे फ़िल्म निर्माताओं का यह डर साफ़ ज़ाहिर होता था कि बहुत ज़्यादा अंग्रेज़ी हुई तो दर्शक अपना मन मोड़ लेगा। इस तर्ज़ के संवाद-लेखन में भाषा का एक विचित्र घालेमल होता था, बहुत कुछ वैसा ही जैसा कि बीते दशक के शुरुआती सालों में प्रदर्शित फ़िल्मों के नाम हैं : *बाज़ : अ बर्ड इन डेंजर, क़र्ज़ : द बर्डेन ऑफ़ ट्रुथ, इक़ रिश्ता : द बॉन्ड ऑफ़ लव*।[61]

हिंग्लिश फ़िल्मों को लेकर चल रही चर्चा से जान पड़ता है कि फ़िल्मों के संदर्भ में हिंग्लिश फ़िलहाल एक (विस्तार लेती) उप-संस्कृति और बाज़ारी सम्भावनाओं की भूमिका निभा रही है। साथ ही हिंदी-मात्र में बनी उन ब्लॉकबस्टर फ़िल्मों के साथ उसकी भारी सांस्कृतिक दूरी भी बहुत स्पष्ट है जो अंतरप्रांतरों में बेहतर प्रदर्शन कर रही हैं।[62] मिसाल के लिए वेट्टीकेड के अनुसार प्रकाश झा की 2010 की फ़िल्म *राजनीति* ब्लॉकबस्टर थी तो भी 'उसका मज़ाक़ उड़ा कि कथाक्रम में एक जगह संवाद में सिर्फ़ यह जताने के लिए कहानी महाभारत पर आधारित है 'किंतु', 'परंतु' और 'ज्येष्ठ पुत्र' का इस्तेमाल किया गया है जिसके चलते हिंदी अचानक पुरानी शैली की लगने लगती है'।[63] 'हिंग्लिश टाइटल्स : एम्प्टी कॉफ़र्स (हिंग्लिश शीर्षक : थोथा चना बाजे घना) ?' शीर्षक एक अख़बारी लेख में कहा गया :

> आजकल बॉलीवुड में फ़िल्मों के नाम, गीत-संगीत और यहाँ तक कि संवाद में भी हिंग्लिश का चलन है। लेकिन मल्टीप्लेक्स में जाने वाले दर्शकों के बीच पैठ के बावजूद कुछेक फ़िल्मों को छोड़ दें तो एकल-रजतपट वाले सिनेमाघर और छोटे शहर के दर्शकों के दिल से ज़्यादातर फ़िल्में अपने तार नहीं जोड़ पा रहीं। एक अग्रणी वितरक का कहना है 'छोटे केंद्रों पर लोगों को भाषा समझ पाने में कठिनाई आ रही है। दिलकश नाम या अपनी पुरकशिश धुन के साथ गीत भले उनकी ज़बान पर चढ़ जाता हो लेकिन संवाद अक्सर उतने असरदार साबित नहीं होते जितने कि कि मल्टीप्लेक्स के दर्शकों पर'।[64]

इस तरह देखें तो सिनेमा में हिंग्लिश एकताकारी असर की जगह सामाजिक और सांस्कृतिक समावेशन की अपनी अक्षमताओं को इंगित करती जान पड़ती है। महानगरीय मल्टीप्लेक्सों से बाहर हिंग्लिश फ़िल्मों की लोकप्रियता और संवाद स्थापित कर पाने की क्षमता सीमित है जिससे हिंग्लिश की सांस्कृतिक और भौगोलिक धरातल पर स्तरीकृत प्रकृति और अपवर्जन-प्रवृत्ति ज़ाहिर होती है।

विज्ञापनों के साथ-साथ, फ़िल्म के गीत भी उन दायरों में शुमार हैं जिनमें हिंग्लिश की रचनात्मकता और सौंदर्यशास्त्र को लेकर चर्चा होती है। क्रियेटिव डायरेक्टर और फ़िल्मी गीतों के रचनाकार प्रसून जोशी (जिन्हें कैचलाइन 'ठंडा मतलब कोका-कोला' के लिए 2003 में केन्स लायंस इंटरनैशनल ऐडवर्टाइज़िंग फ़ेस्टीवल में केन्स लायन्स अवार्ड से नवाज़ा गया) फ़िल्मी गीतों में हिंग्लिश की

---

[61] उनका तर्क़ है कि ऐसे आत्म-अनुवाद 'बेतुके' है : 'बहुत बेतुका जान पड़ता है जब प्रकाश झा की 2011 में प्रदर्शित फ़िल्म आरक्षण में एक से ज़्यादा बार दर्शकों को अपने तत्काल बोले गये संवाद का सीधा अंग्रेज़ी अनुवाद सुनाते हैं. जैसे एक दृश्य में अमिताभ बच्चन कहते हैं—'क्या आप मुझ पर जातिवाद का आरोप लगा रहे हैं ?' और इसके तुरंत बाद कहते हैं 'आर यू एक्यूजिंग मी ऑफ़ बीइंग कास्टिस्ट ?'. वेट्टीकेड (2011).

[62] अभिनेता से निर्देशक से बने दीपक तिजोरी एक रुचिकर बात यह बताते हैं कि सेंसर बोर्ड हिंग्लिश फ़िल्मों को लेकर उतनी कड़ाई नहीं बरतता जिससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि सेंसरबोर्ड शहरी और गँवई ग़रीबों के बरअक्स शहरी मध्यवर्ग के प्रति एक अलग राय रखता है.; लालवाणी (2003) में उद्धृत.

[63] तृषा गुप्ता (2011) लिखती हैं, 'बॉलीवुड के लिए पटकथा और संवाद लिखने वाली एक नवयुवती ने मुझे हाल ही में बताया कि, लोग अपनी असली ज़िंदगी में अब 'क्या वक़्त हुआ है ?' या 'तुम यहाँ कैसे ?' जैसे वाक्य नहीं बोलते. पूरा का पूरा वाक्य हिंदी में बोलने का विचार मज़ाक़ की हद तक गया-बीता हो गया है'. निश्चित ही यह एक महानगरीय और सीमित सामाजिक वर्ग का नज़रिया है जिससे मुम्बई और दिल्ली से बाहर बसती दुनिया में चल रहे भाषाई व्यवहारों की झलक नहीं मिलती.

[64] आकांक्षा नवल शेतये (2011)

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 533

रचनात्मकता के सबसे मुखर समर्थक हैं :

> आपने *रंग दे बसंती* फ़िल्म का गीत 'मस्ती की पाठशाला' ज़रूर सुना होगा। इसमें एक पंक्ति आती है... 'टल्ली होकर गिरने से समझी हमने ग्रैविटी ...' अब इस पंक्ति में ग्रैविटी अंग्रेज़ी का है, टल्ली पंजाबी का है और समझी हिंदी का। तो फिर यह गीत किस भाषा का हुआ? यह एक नौजवान के अनुभवों को बयाँ करता है ... भाषा किस तरह सम्भावनाशील हो उठती है? आप उसके सहारे बारीकियों और अधबीच की सूचना देने वाले अर्थप्रसंगों को अभिव्यक्त कर सकते हैं ...'[65]

यह बात नोट करने की है कि हिंदी फ़िल्मी गीतों की लम्बे वक़्त से सांगीतिक और भाषागत विपुलता और सार-संग्रही प्रवृति के कारण प्रशंसा की जाती रही है और अंग्रेज़ी के मुहावरे तथा शब्द हिंदी फ़िल्मों में कम से कम 1940 के दशक से हास्य के रंग उत्पन्न करने के लिए उपयोग में लाए जाते रहे हैं।[66] लेकिन प्रसून जोशी इस बात की तरफ़ इशारा कर रहे हैं कि समकालीन हिंग्लिश गीतों के भीतर शब्दों से खेलने और शब्दों को रचने तथा मौजूदा महानगरीय युवजन के भाव-जगत को अभिव्यक्त करने की क्षमता है। ठीक इसी तरह कुछ अन्य लोगों ने *देव डी* या *डेल्ही बेली* के गीतों की प्रशंसा गलदश्रु भावुकता भरे रोमांस को बड़े मौलिक ढंग से नकारने और इस तरह उदारीकरण के बाद की पीढ़ियों के भावजगत की तर्जुमानी करने की ताक़त के लिए की है:

> भट्टाचार्य द्वारा रचित *देव डी* फ़िल्म के लिए 'इमोशनल अत्याचार' नाम का मुहावरा जो कि इसी नाम के गीत में आता है, अब एक पूरी पीढ़ी के शब्दकोश में दाख़िल हो चुका है जो पहली बार भारतीय संदर्भों में प्रेम और वासना की अमेरिकी धारणा से मुठभेड़ करना सीख रहा है।[67]

तब से, इमोशनल अत्याचार युवाओं से मुख़ातिब टीवी चैनल बिंदास पर एक ऐसे कार्यक्रम का शीर्षक बन चुका है, जो अमेरिकी टीवी कार्यक्रम *चीटर्स* पर आधारित है।[68]

अब कुछ बातें भारतीय टेलीविज़न के हवाले से। यह बड़ी तेज़ी से बदलता, तरल क्षेत्र है जहाँ चैनल और प्रोडक्शन हाउस नये-नये रुझानों की तरफ़ छलांग मारते रहते हैं और जिन कार्यक्रमों के दर्शक कम हों, उन्हें हटाते रहते हैं। समाचार कार्यक्रमों और समाचार चैनलों के अतिरिक्त भारतीय टेलीविज़न की मुख्य विधाएँ हैं सोप ऑपेरा, धार्मिक धारावाहिक तथा सत्यकथा-विषयक रिऐलिटी शो। हिंग्लिश चैनल वी के युवजनमुखी धारावाहिकों[69] और रिऐलिटी शो में इस्तेमाल की जाती है जबकि पारिवारिकता से भरपूर सोप-ऑपेरा जैसे कि एकता कपूर के प्रोडक्शन हाउस द्वारा बनाए गये सोप-ऑपेरा और धार्मिक धारावाहिकों में सिर्फ़ हिंदी का इस्तेमाल होता है।[70]

2009 से 2011 के बीच दो बार चले चैनल वी के डेटिंग शो *डेयर 2 डेट* के पहले दो एपिसोड में कॉलेज के विद्यार्थी थे या कॉलेज के ड्रापआऊट नौजवान प्रतिभागी अपना परिचय देने या फिर एक-दूसरे से पहली दफ़ा मिलते वक़्त अंग्रेज़ी में बोलते हैं लेकिन जिस घड़ी उन्हें लगता है कि सामने वाले का अंग्रेज़ी बोलने का सामर्थ्य कम है तो मिलवाँ भाषा या फिर हिंदी और अंग्रेज़ी के बीच हेरफेर

---

[65] जोशी (2011) : 194-5.

[66] पी.वोहरा (2014). यह भी देखें, रविकांत (2014).

[67] अमिताभ भट्टाचार्य भाषा के रूप में हिंग्लिश को लेकर बहुत गम्भीर है और इसका बहुत सम्मान करते हैं. उनकी नज़र में हिंग्लिश हिंदी और अंग्रेज़ी के शब्दों को आमने-सामने टकराकर हँसी पैदा करने का माध्यम नहीं बल्कि समकालीन यथार्थ को धारण करने वाली एक संकर भाषा है... जयदीप साहनी और भट्टाचार्य सरीखे नयी लहर के गीतकार हिंग्लिश के साथ सफल नव-प्रयोगों के अग्रिम मोर्चे पर हैं. इन प्रयोगों ने हिंदी फ़िल्म के गीतों को मुक्त किया है, फ़िल्म के गीतों का दायरा कुछ बड़ा हुआ है और उनमें अब शाश्वत प्रेम तथा लिजलिजे रोमांस से जुदा बातों की भी तर्जुमानी हो सकती है. यहाँ तक कि प्रेम जैसा चिर-परिचित विषय भी हो तो उसके साथ अब गीतों में अलग तरीक़े का बरताव किया जाता है, जैसे कि डेल्ही बेली के ही गीत 'जा चुड़ैल' में, जहाँ एक चोट खाया आशिक़ कहता है, 'उँगली पे नचाके तूने /चूना जो लगाया मुझे / अरे जा जा जा / गो टू हेल..../अरे जाओ जा जा /आई वान्ट साइलेंस / जा चुड़ैल, जा चुड़ैल.' मेहरोत्रा, तिथि अज्ञात.

[68] देखें, https://www.youtube.com/show/emotionalatyachar. 23.7.14 को देखा गया.

[69] परमार (2014).

[70] शोमा मुंशी (2010).

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 534

कर बोलने लगते है। ख़ालिस हिंदी के भी वाक्य सुनाई देते हैं, ख़ास कर तब जब ब्रिटेन में जन्मा ऐंकर (सूत्रधार) ऐंडी समय-समय पर एक 'सुंदर प्रेमकथा' से जुड़ी सांस्कृतिक अपेक्षाओं पर बोलता दिखता है (इक लड़की थी अनजानी सी, इक लड़का दीवाना सा, और उनके बीच हुई एक मनोहर प्रेम कहानी) लेकिन यहाँ हिंदी का इस्तेमाल इन अपेक्षाओं को ख़ारिज करने के लिए होता है (... इस शो में ऐसा कुछ नहीं होगा!!)।[71]

पहले एपिसोड में, कॉलेज जाने की दहलीज़ पर खड़ी 18 वर्षीय मध्यवर्गीय मालविका 22 वर्षीय दिल्ली के गँवई इलाक़े के जाट लड़के कश को डेट करती है जो जेब से तो धनी है लेकिन अपनी अंग्रेज़ी से ग़रीब (ऐंडी उसे देसी प्रिंस बुलाता है)। मालविका पहले कैमरे के सामने अंग्रेज़ी में अपना परिचय देती है ('हाय, आय'म मालविका, आय'म एट्टीन इयर्स ओल्ड'), फिर तनिक देर को हिंदी की तरफ़ मुड़ती है और उसके बाद अंग्रेज़ी की तरफ़, 'मैंने अपना स्कूल अभी ख़त्म करा (वह 'किया' के स्थान पर दिल्ली की बोलचाल में प्रचलित क्रियापद 'करा' का इस्तेमाल करती है) ऐंड आय ऐम लुकिंग आऊट फ़ॉर कॉलेज'। और, अनौपचारिक बातचीत की शैली अपनाते हुए अपने मनपसंद रंग 'गुलाबी' और अपने सपनों के राजकुमार से मिलने के बारे में बात करते समय हिंदी और अंग्रेज़ी के बीच आवाजाही जारी रखती है ('जो भी पिंक दिख जाए मुझे चाहिए')। कश अपना परिचय पूरा का पूरा हिंदी में देता है (गहरे हरियाणवी लहजे में) और अपने आत्म-परिचय में वह अंग्रेज़ी के इतने ही शब्द या मुहावरे इस्तेमाल करता है... 'रीयल एस्टेट' तथा 'वी आर फ़ार्मर्स'। कारों की क़तार और सशस्त्र बॉडीगार्ड की पूरी ग़ारद को साथ में लेकर जब वह पहली बार मालविका से मिलता है तो इसका मालविका पर असर होता है ('ही इज वेयरिंग पिंक, माय फ़ेवरिट कलर ... आय लाइक हिज़ स्टाइल, इज़ द कार हिज़?' उसने गुलाबी रंग (के कपड़े) पहने हैं..मेरा मनपसंद रंग..मुझे उसकी स्टाइल पसंद है...क्या ये उसकी कार है। कश जब मालविका को हिंदी में जवाब देता है और वह समझ जाती है कि अंग्रेज़ी बोलने में कश कमज़ोर है तो वह तुरंत हिंदी की और मुड़ती है, लेकिन तभी तक जब तक उसे दोनों के बीच का सामाजिक-सांस्कृतिक अंतर न जताना हो।

मालविका— सो ह्वाट डू यू डू राइट नाऊ? (अभी तुम क्या करते हो ?)
कश— फ़ैशन डिजाइनर.
मालविका— फ़ैशन डिज़ाइनिंग? (कट)
कश— आप क्या करते हैं दिन भर?
मालविका— वेल, आय हैव जस्ट फ़िनिश्ड स्कूल नाऊ, आय'म प्रिपेयरिंग टू गो टू कॉलेज
कश— स्कूल गर्ल, ओह!
मालविका— आय फ़िनिश्ड स्कूल, तो अब मैं कॉलेज जर्नलिज़म के लिए जा रही हूँ.
कश— पत्रकार बनना चाहते हैं?
मालविका— पत्रकार? (जर्नलिस्ट?) (दोनों भविष्य को लेकर बातें करने लगते हैं कि आगे क्या करना है)
कश— आगे बढ़ने की सोचा?... बहुत सारे प्रस्ताव हैं ... चुनाव लड़ो, फ़ैशन लड़ो, सुंदरता है आपके लिए.
मालविका— क्या करूँ, इलेक्शंस? इलेक्शंस, किस चीज़ के?
कश— संसद ... (मालविका दंग रह जाती है। कट)
मालविका— एक्सक्यूज़ मी, वी डोंट बिलॉन्ग टू द क्लास दैट ऑन फ़ॉर्म हाऊसेज़ ऐंड ... वी आर ऑल क्रियेटिव पी'पल। माय मदर'ज़ ऐन आर्टिस्ट, माय फ़ादर'ज़ ऐन आर्किटेक्ट। ऐसी लाइफ़

---

[71] इसके बाद वह हिंदी-अंग्रेज़ी का मिश्रण करने लगता है और एक के बीच में दूसरी भाषा बोलने लगता है, 'क्या कर पाएँगे, एक दूसरे को इम्प्रैस, उह? सो लेट्स फ़ाइंड आउट! आज कौन जाएगा डेट पर?' https://youtube.com/watch?v=0hbOysIoryv0. 23.7. 2013 को देखा गया.

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 535

स्टाइल नहीं है।
कश — चलो चलो चलो। आपके पापा क्या, बिल्डिंग बनाते हैं।
मालविका — आर्किटेक्ट्स.
कश — बिल्डिंग बनाते हैं।
मालविका — वेल, इफ़ दैट्स ह्वाट यू कॉल इट। (हाँ, चाहे तो कह लो)
कश — करवाएँगे कभी काम उनसे.

जब कार्यक्रम में कैमरे के सामने इस पहली मुलाक़ात को लेकर मालविका की टिप्पणी दिखाई जाती है तो वह अपने सामाजिक सांस्कृतिक अंतर को जताने के लिए भाषा का जैसा चयन करती है वह दिलचस्प है :

ही'ज़ नॉट बैड, ही'ज़ डिसेंट लुकिंग गाय। पर जब अपना मुँह खोलते हैं तो वी कैन रन अवे। मतलब कि क्या बोलते हैं वो ख़ुद ही समझ सकता, और कोई समझ नहीं सकता।

हालाँकि दोनों अनमेल नहीं जान पड़ते हैं। दोनों समान रूप से दिल्ली के युवा-जगत का हिस्सा हैं, एक ही तर्ज़ के कपड़े पहनते हैं और उनकी उपभोग की एक-सी चाहतें हैं (लकदक कार, शैम्पेन परोसने वाले अलबेले रेस्तराँ, लेकिन दोनों के सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्य निहायत मुख़्तलिफ़ हैं (कहना न होगा, मालविका को कश बहुत पुराने फ़ैशन का जान पड़ता है) और दोनों जिस तरह एक-दूसरे की बात सुनते और आपस में बोलते हैं वह इस विभेद का स्पष्ट संकेतक है। हालाँकि दोनों एक दूसरे को हिंदी, अंग्रेज़ी या दोनों की मिली-जुली भाषा में समझ लेते हैं तो भी दोनों का भाषाई-सामर्थ्य अलग-अलग है। भाषाओं का संयोजन उन्हें एक तरफ़ समावेशी बनाता है तो दूसरी तरफ़ विभेद को ज़ाहिर करने के लिए भी वे भाषा का समान रूप से उपयोग कर सकते हैं जैसा कि मालविका ने किया भी है। कश जो कुछ कहता है (या नहीं कह पाता) मात्र उतने भर से ही नहीं बल्कि उसके बोलने का लबो-लहजा भी उसे फ़ौरन एक ख़ास वर्ग से जोड़ देता है। इस तरह हिंग्लिश समावेशन के प्रयास तो करती है लेकिन वर्गगत और संस्कृतिगत अंतर को भी रेखांकित करती है।

निष्कर्ष

अंग्रेज़ी और हिंदी के भाषाई मिश्रण के औपनिवेशिक दौर के इतिहास[72] के बावजूद, उत्तर-औपनिवेशिक भारत में भाषिक विचारधाराओं ने भाषाई मिश्रण का प्रतिकार और तिरस्कार किया। तो भी, बीते दो दशक में भाषाई शुद्धता के विचार की ज़मीन खिसक गयी है और हिंदी अथवा अंग्रेज़ी साँचे वाली अंग्रेज़ी तथा हिंग्लिश ने सार्वजनिक मान्यता हासिल की है। हिंग्लिश विज्ञापन-जगत और मीडिया में ऊपर चढ़ते, महत्त्वाकांक्षी तथा आत्मविश्वासी भारत का प्रतीक बनी है। हिंग्लिश चाहे हिंदी साँचे वाली हो या अंग्रेज़ी साँचे वाली, दोनों को सार्वजनिक विमर्श में हिंग्लिश ही कहा जाता है। ऐसे में ज़ाहिरा तौर पर यह एक व्यापक परिघटना है। उसमें ढेर सारे विदेशज अंग्रेज़ी शब्दों वाली हिंदी भी शामिल है, संकेत-परिवर्तन भी और ढेर सारे हिंदी शब्दों से युक्त अंग्रेज़ी तथा भारतीय तर्ज़ की अंग्रेज़ी भी। जहाँ एक तरफ़ अधिकार तथा हक़दारी के दावों के ज़रिये हिंदी को अंग्रेज़ी के विरुद्ध खड़ा करना जारी है वहीं हिंदी-अंग्रेज़ी द्विभाषिकता की एक छोटी-सी लहर रोज़मर्रा की ज़िंदगी और एक बड़ी तथा विस्तार लेती बहुरंगी आबादी का हिस्सा बन चली है, जिसे उन लोगों के बीच भी देखा जा सकता है जिनकी अंग्रेज़ी भाषा पर पकड़ सीमित है।

बहरहाल, हिंग्लिश को भविष्य की भाषा और एकताकारी ताक़त बताने वाली विजयघोषी भविष्यवाणियाँ इस भाषा की सामाजिक (और भौगोलिक) समावेशन की सीमा तथा हिंग्लिश से

---

[72] त्रिवेदी (2011) : 82-97.

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 536

सूचित होती सामाजिक और वर्गीय स्तरीकरण से आँख फेर लेती हैं। ये विजय-गर्वी घोषणाएँ मौजूदा कुछ और प्रक्रियाओं की भी अनदेखी करती हैं जैसे हिंदी का राजनीति और समाचार की भाषा के रूप में समानांतर विस्तार तथा अंग्रेज़ी माध्यम की शिक्षा में जगह बनाती सीमित द्विभाषिकता और संकेत-परिवर्तन। इन वजहों से भाषाई प्रयोग के दायरों का विपुंजन और भाषाई मिश्रण के विस्तार, भूमिका, अर्थ तथा स्वीकृति का परीक्षण करना, भाषाई इस्तेमाल के दौरान लहज़े और स्वर के आरोह-अवरोह को दर्ज करना, किसी वक्ता की शब्द-सम्पदा के भीतर हो रहे भाषाई मिश्रण तथा सुनने वाले की प्रतिक्रिया को दर्ज करना उपयोगी हो सकता है। तनिक विस्तार से कहें तो किसी वक्ता की उम्र, पृष्ठभूमि, अवस्थिति तथा जीवन शैली को ध्यान में रखते हुए हिंग्लिश की पहुँच और विविधता का अध्ययन करना और मीडिया की सरगर्म बहसों से परे सोचना, मुक़म्मल तस्वीर के आस-पास पहुँचने से पहले, कहीं ज़्यादा ज़रूरी है।

संदर्भ

अनुजा चौहान (2008), *द जोया फ़ैक्टर,* हार्पर कालिन्स, नयी दिल्ली.

अभय कुमार दुबे, अंतिम परिचर्चा. सराय हिंग्लिश कार्यशाला, 18-19 अगस्त. इस लिंक पर उपलब्ध, http://sarai.net/hinglish-workshop-18-19-august-2014-recordings/ (लिंक प्राप्ति की तिथि 31 जनवरी 2015).

अंजू मोहन (2010), 'इंग्लिश ऑर हिंग्लिश — डज इट मैटर ह्वाट इण्डियन स्टुडेंटस आर लर्निंग ?' *द गार्जियन* मोर्टारबोर्ड ब्लॉग. इस लिंक पर उपलब्ध, http://www.guardian.co.uk/education/mortarboard/2010/jan/27/english-hinglish-for-indian-students (लिंक प्राप्ति तिथि 4 सितम्बर 2012).

अनिक डे तथा पास्कल एन. फ़ंग (2014), 'अ हिंदी-इंग्लिश कोड स्वीचिंग कॉरपस', एन कल्जोलारी, के.एच. चोकरी, टी. डेक्लर्क, एच. लॉफ़स्सन, बी. मेगार्ड, जे. मारियानी, ए. मोरेनो, जे. ओडिक तथा एस. पाइपेरिदिस (सम्पा.), *प्रॉसिडिंग्स ऑफ़ द नाइंथ इंटरनैशनल कांफ्रेंस ऑन लैंग्वेज रिसोर्सेज़ ऐंड इवैल्यूएशन,* 14, ईएलआरए.

अज्ञात (2010), 'हिंगलिश, अ स्ट्रीक्ट नो नो इन बीपीओज़', *इण्डियन एक्सप्रेस,* 13 मई. http://www.indianexpress.com/news/hinglish-a-strict-no-no-in-bpos/618318/0 पर उपलब्ध. 4 सितम्बर, 2012 को देखा गया.

आकाँक्षा नवल-शेतये (2011), 'हिंग्लिश टाइटल्स, एम्प्टी कॉफ़र्स ?' *डीएनए* (*डेली न्यूज़ ऐंड एनालिसिस*), 8 जून. इस लिंक पर उपलब्ध:http://www.dnaindia.com/entertainment/report_hinglish- titles-empty-coffers_1552531 (लिंक प्राप्ति की तिथि 5 सितम्बर 2012).

आंग साइ (2011), 'अ डायक्रॉनिक इंवेस्टीगेशन ऑफ़ हिंदी-इंग्लिश कोड स्विचिंग, यूज़िग बॉलीवुड स्क्रिप्ट्स', *इंटरनैशनल जर्नल ऑफ़ बायलिंग्वलिज़म,* 15 (4).

आर. जयकिशन (2011), 'गंगहो विद् हिंग्लिश', 1 अगस्त. इस लिंक पर उपलब्ध, http://www.gla.org.in/news_detail.php?id=30 (लिंक प्राप्ति की तिथि 2 सितम्बर 2012).

आयशा क़िदवई (2014), 'द लिंग्विस्टिक्स ऐंड पॉलिटिक्स ऑफ़ मिक्स्ड कोड्स : अंडरस्टैण्डिंग साइट ऐंड मैनर', सराय हिंग्लिश कार्यशाला, नयी दिल्ली, 18-19 अगस्त. इस लिंक पर उपलब्ध, http://sarai.net/hinglish-workshop-18-19-august-2014-recordings/ (लिंक प्राप्ति की तिथि 31 जनवरी 2015).

आयशा विश्वमोहन (2004), 'कोड-मिक्सिंग विद अ डिफ़रेंस : अ लुक ऐट पॉपुलर जर्नलिज़म इन इण्डिया'. *इंग्लिश टुडे,* 20.3.

आशीष त्रिपाठी (2003), 'एक्सपर्ट लिंक्स हिंग्लिश विद पुअर आर्टिकुलेशन' *टाइम्स ऑफ़ इण्डिया,* लखनऊ संस्करण, 7 दिसंबर. इस लिंक पर उपलब्ध, http://articles.timesofindia.indiatimes.com/2003-12-07/lucknow/27212523_1_hinglish-mother-tongue-language (लिंक प्राप्ति की तिथि 5/9/2012).

ए.एम. वेट्टीकेड (2011), 'मेरे फ़िल्म की लैंग्वेज', *इण्डियन एक्सप्रेस,* 28 अगस्त. इस लिंक पर उपलब्ध,

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 537

http://newindianexpress.com/entertainment/hindi/article308535.ece (लिंक प्राप्ति की तिथि 5 सितम्बर 2012).

एड्रियन ऐथिक (2011), 'फ्रॉम सिनेमा हॉल टू मल्टीप्लेक्स: अ पब्लिक हिस्ट्री', *साउथ एशियन पॉप्युलर कल्चर,* 9(2).

एम.एम. सिब्बा (2012), 'रिसर्चिंग ऐंड थ्योराइजिंग मल्टीलिंग्वल टेक्स्ट्स', एम.एम. सिब्बा (सम्पा.), *लैंग्वेज मिक्सिंग ऐंड कोड-स्वीचिंग इन राइटिंग :एप्रोचेज टू मिक्स्ड-लैंग्वेज रिटेन डिस्कोर्स,* रुटलेज़, न्युयॉर्क.

एमेलिया जेंटिलमैन (2007), 'द क्वींस हिंग्लिश गेंस इन इण्डिया', *न्युयॉर्क टाइम्स.* इस लिंक पर उपलब्ध, http://www.nytimes. com/2007/11/21/world/asia/21ihtletter.1.8417733.html?pagewanted=all (लिंक प्राप्ति की तिथि 2 सितम्बर 2012).

एन. सैनी (2011), 'फ़िल्म, ऐड वर्ल्ड और टीवी पर वाह! हिंग्लिश बोली', *इण्डिया टुडे,* मुम्बई, 20 दिसंबर. इस लिंक पर उपलब्ध, http://aajtak.intoday.in/story/english-mix-hindi-rocks-in-add-world-1-687692.html (लिंक प्राप्ति की तिथि 31 जनवरी 2015).

एम.बीसन (2012),'हिंग्लिश कॉपीराइटिंग' : http://www.buzzwords.ltd‡uk/Hinglishcopywriting.pdf पर उपलब्ध. 3 सितम्बर, 2012 को देखा गया.

कृष्ण कुमार (2001), 'भाषा और सामाजिक विभाजन', रमाकान्त अग्निहोत्री और संजय कुमार (सम्पा.), *भाषा बोली और समाज,* देशकाल प्रकाशन, नयी दिल्ली.

किशोर कुमार (2014), 'राँची टेक्स द इंग्लिश रूट टू एचीव सक्सेस', *टाइम्स ऑफ़ इण्डिया,* राँची संस्करण, 18 जुलाई. इस लिंक पर उपलब्ध:
http://timesofindia.indiatimes.com/city/ranchi/Ranchi-takes-the-English-route-to-achiev-success/articleshow/38596813.cms (लिंक प्राप्ति की तिथि 23 जुलाई 2014).

कृतिका रामालिंगम (2009), 'पूअर पेरेंट्स पुशिंग चिल्ड्रेन इनटू इंग्लिश स्कूल्स', *इण्डिया टुगेदर,* 26 अक्तूबर. इस लिंक पर उपलब्ध:
http://indiatogether.org/kgiriedn-education (लिंक प्राप्ति तिथि 23 जुलाई 2014).

कैथरीन हैंसेन (1981), 'रेणुज़ रीजनलिज़म : लैंग्वेज ऐंड फ़ॉर्म', *द जर्नल ऑफ़ एशियन स्टडीज़* 40(1).

कैरोल उपाध्याय और ए. आर. वासवी (सम्पा.) (2008), *इन ऐन आउटपोस्ट ऑफ़ द ग्लोबल इकॉनॉमी : वर्क ऐंड वर्कर्स इन इण्डियाज़ ट्रांसफ़ॉर्मेशन टेक्नॉलॉजी इंडस्ट्री,* रुटलेज़, नयी दिल्ली.

जैनिस ऐंडराउत्सोपौलोस (2012), 'रेपरटरीज़, कैरेक्टर्स ऐंड सींस: सोसियोलिंग्विस्टिक्स डिफ़रेंस इन टर्किश-जर्मन कॉमेडी', *मल्टीलिंग्वा* 31.

जी.जे.वी. प्रसाद (2011), 'तमिल, हिंदी, इंग्लिश : द न्यू मेनाज अ तवा', रीता कोठारी और रुपर्ट स्नेल (सम्पा.), *चटनीफ़ाइंग इंग्लिश : द फ़िनॉमेनन ऑफ़ हिंग्लिश,* पेंगुइन इण्डिया, नयी दिल्ली.

डब्ल्यू.एम. ओ'बर्र (2008), 'ऐडवर्टाइज़िंग इन इण्डिया', *ऐडवर्टाइज़िंग ऐंड सोसायटी रिव्यू,* 9 (3). इस लिंक पर उपलब्ध: http://muse.jhu.edu/journals/advertising_and_society_review/v009/9.3.o-barr.html (लिंक प्राप्ति की तथि 3 सितम्बर 2012).

देवयानी शर्मा (2011), 'रिटर्न ऑफ़ द नेटिव : हिंदी इन ब्रिटिश इंग्लिश', रीता कोठारी और रुपर्ट स्नेल (सम्पा.), *चटनीफ़ाइंग इंग्लिश : द फ़िनॉमेनन ऑफ़ हिंग्लिश,* पेंगुइन इण्डिया, नयी दिल्ली.

दीपशिखा घोष (2014), 'ये दिल माँगे मोर': सोनिया गांधी वर्सेज नरेंद्र मोदी ओवर मार्टियर्स वर्ड्स', *एनडीटीवी,* 5 मई. इस लिंक पर उपलब्ध: http://www.ndtv.com/elections-news/yeh-dil-maange-more-sonia-gandhi-vs-narendra-modi-over-martyrs-words-560189 (लिंक प्राप्ति की तिथि 30 जनवरी 2015).

पीडीएफ़ इस लिंक पर मौजूद है, http://ijpc.org/journal/index.php/ijpcjournal/article/viewFile/10/12 (लिंक प्राप्ति की तिथि 4 सितम्बर 2012).

पी.के. मेहरोत्रा (तिथि अज्ञात), 'रन डीके रन : डर्टी लिरिक्स दैट रिंग परफेक्टली ट्रू' *फ़र्स्टपोस्ट.* इस लिंक पर उपलब्ध:
http://m.firstpost.com/ideas/run-dk-run-dirty-lyrics-that-ring-perfectly-true-34040.html?page=3 (लिंक प्राप्ति तिथि 4 सितम्बर 2012).

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 538

पी. खन्ना (2010), 'द मोस्ट हिलेरियस ऐड्स एवर', *हिंदुस्तान टाइम्स,* 6 फ़रवरी, नयी दिल्ली. इस लिंक पर उपलब्ध: http://www.hindustantimes.com/television/the-most-hilarious-ads-ever/article1-505890.aspx (लिंक प्राप्ति की तिथि 30 जनवरी 2015).

पीटर आउर (1998), 'फ्रॉम कोड स्विचिंग वाया लैंग्वेज मिक्सिंग टू फ़्यूज़्ड लेक्ट्स: टूवर्ड्स अ डायनैमिक टोपोलॉजी ऑफ़ बाइलिंग्विल स्पीच', *इनलिस्ट,* अंक 6.

ब्रज बिहारी कचरु (1975), 'टुवर्ड्स स्ट्रक्चरिंग द फ़ॉर्म ऐंड फ़ंक्शन ऑफ़ कोड मिक्सिंग : ऐन इण्डियन पर्सपेक्टिव', *स्टडीज़ इन द लिंग्विस्टिक साइंसेज़* 5.1.

-----(1978), 'कोड-मिक्सिंग ऐज़ कम्युनिकेटिव स्ट्रैटजी इन इण्डिया', जे. अलेटिस (सम्पा.), *इंटरनैशनल डायमेंशन्स ऑफ़ बायलिंग्वल एजुकेशन,* जार्जटाउन युनिवर्सिटी प्रेस, वाशिंग्टन, डीसी.

बी.के. जॉन (2007), *एंट्री फ्रॉम बैकसाइड ओनली : हज़ार फ़ंडाज़ ऑफ़ इण्डियन इंग्लिश,* पेंगुइन इण्डिया, नयी दिल्ली.

बी.के. मिश्रा (2011), 'हिंग्लिश इन वोग इन पीयू (पटना युनिवर्सिटी)', *टाइम्स ऑफ़ इण्डिया,* 12 जून. इस लिंक पर उपलब्ध : http://articles.timesofindia.indiatimes.com/2011-06-12/patna/ 29649720_1_hinglish-language-pu-hindi (लिंक प्राप्ति तिथि 5 सितम्बर 2012).

तृषा गुप्ता (2011), 'डज़ 'हिंग्लिश' डेमॉक्रैटाइज़ इंग्लिश, ऑर बास्टर्डाइज़ हिंदी ?' (हिंग्लिश पर दो खण्डों के लेख का पहला खण्ड) ब्लॉग, *फ़र्स्टपोस्ट,* 29 जून. इस लिंक पर उपलब्ध: http://trishagupta.blogspot.co.uk/2011/07/does-hinglish-democratise-english-or.html (लिंक प्राप्ति की तिथि 4 सितम्बर 2012).

नंदिनी गुप्तू (2013), 'सरवाइल सेंटिनेल्स ऑफ़ द सिटी : प्राइवेट सिक्युरिटी गार्ड्स, ऑर्गनाइज़्ड इनफ़ॉरमलिटी ऐंड लेबर इन इन्टरैक्टिव सर्विसेज़ इन ग्लोबलाइज़्ड इण्डिया', *इंटरनैशनल रिव्यू ऑफ़ सोशल हिस्ट्री,* 58 (1).

निलंजना एस. रॉय (2004), 'व्हाट्स वेनी, विदी, विची इन हिंग्लिश ?', *बिजनेस स्टैंडर्ड इण्डिया,* नयी दिल्ली, 19 अक्तूबर. इस लिंक पर उपलब्ध http://www.businessstandard.in/india/news/what%60s-%60veni-vidi-vici%60-in-hinglish/191117/& (लिंक प्राप्ति की तिथि 2 सितम्बर 2012).

नीलम श्रीवास्तव (2005), 'लैंग्वेजेज़ ऑफ़ द नेशन इन सलमान रश्दीज़ मिडनाइट्स चिल्ड्रेन ऐंड विक्रम सेठ्स अ सूटेबल ब्वॉय', एआरआइईएल: *अ रिव्यू ऑफ़ इंटरनैशनल इंग्लिश लिटरेचर,* 36(1-2).

मथंगी कृष्णमूर्ति (2011), 'फ़र्टिव टंग्स : लैंग्वेज पॉलिटिक्स इन द इण्डियन कॉल सेंटर', रीता कोठारी तथा रुपर्ट स्नेल (सम्पा.), *चटनीफ़ाइंग इंग्लिश : द फ़िनॉमेनन ऑफ़ हिंग्लिश,* पेंगुइन, नयी दिल्ली.

रपट: 'हिंदी पर फहराया, हिंग्लिश का परचम', *राँची एक्सप्रेस* (2012), 14 अप्रैल. इस लिंक पर उपलब्ध: http://ranchiexpress.com/158227 (लिंक प्राप्ति तिथि 31 जनवरी 2015).

रुपर्ट स्नेल (1990), 'द हिडेन हैंड : इंग्लिश लेक्सिस, सिन्टेक्स ऐंड ईडियम ऐज़ डिटरमिनेंट्स ऑफ़ मॉडर्न हिंदी यूसेज़', *साऊथ एशिया रिसर्च* 10(1).

रुचिरा गांगुली-स्क्रेज तथा टी. जे. स्क्रेज (2009), *ग्लोबलाइज़ेशन ऐंड द मिड्ल क्लासेज़ इन इण्डिया : द सोशल ऐंड कल्चरल इम्पैक्ट ऑफ़ नियोलिबरल रिफ़ॉर्म्स,* रुटलेज, लंदन.

रविकान्त (2014), 'फिर भी दिल है 'हिंग्लिश्तानी'?', *हिस्टोरिसाइज़िंग द कंटेम्पररी,* सराय हिंग्लिश कार्यशाला, नयी दिल्ली 18-19 अगस्त. इस लिंक पर उपलब्ध: http://sarai.net/hinglish-workshop-18-19-august-2014-recordings/ (लिंक प्राप्ति तिथि 31 जनवरी 2015).

राधिका परमेश्वरन (2012), 'मोरल डायलेमा ऑफ़ इम्मोरल नेशन : जेंडर, सेक्सुअलिटी,ऐंड जर्नलिज़म इन पेज थ्री'.

राजेंद मेस्त्री (2005), 'असेसिंग रेप्रेज़ेंटेशंस ऑफ़ साउथ अफ्रीकन इण्डियन इंग्लिश इन राइटिंग : ऐन एप्लिकेशन ऑफ़ वेरिएशन थियरी', *लैंग्वेज वेरिएशन ऐंड चेंज* ,17.

रोहिणी मोकाशी-पुणेकर (2011), 'व्यूज़ फ्रॉम ए डिफ़रेंट इण्डिया : नॉट हिंग्लिश बट नागामीज़', रीता कोठारी तथा रुपर्ट स्नेल (सम्पा.), *चटनीफ़ाइंग इंग्लिश : द फ़िनॉमेनन ऑफ़ हिंग्लिश,* पेंगुइन, नयी दिल्ली.

राकेश मोहन भट्ट (2008), 'इन अदर वर्ड्स: लैंग्वेज मिक्सिंग, आइडेंटिटी रिप्रेजेंटेशंस, ऐंड थर्ड स्पेस', *जर्नल ऑफ़ सोसियोलिंग्विस्टिक्स,* 12(2).

रोबिन जेफ्री (2000), *इण्डियाज़ न्यूज़पेपर रिवोल्यूशन : कैपिटलिज़म, पॉलिटिक्स ऐंड द इण्डियन लैंग्वेज प्रेस,* 1977-1999, हर्स्ट, लंदन.

14orsini:Layout 1 2/5/2016 3:55 PM Page 539

रीता कोठारी तथा रुपर्ट स्नेल (2011) (सम्पा.), *चटनीफ़ाइंग इंग्लिश : द फ़िनॉमेनन ऑफ़ हिंग्लिश,* पेंगुइन, नयी दिल्ली.

विक्की लालवाणी (2003), 'हिंग्लिश, द न्यू कैचफ्रेज़ इन बॉम्बे', इस लिंक पर उपलब्ध : http://www.rediff.com /movies/2003/ jan/06list.htm (लिंक प्राप्ति की तिथि 5 सितम्बर 2012).

विसेंट एल. राफेल (1995), 'टैंग्लिश, ऑर द फ़ैंटम पॉवर ऑफ़ लिंगुआ फ्रैंका', *पब्लिक कल्चर,* अंक 8.

वैदेही रामनाथन (2005), 'द इंग्लिश-वर्नाकुलर डिवाइड : पोस्ट कोलोनियल लैंग्वेज पॉलिटिक्स ऐंड प्रैक्टिस', क्लेवेडन, मल्टीलिंग्वल मैटर्स.

संतोष देसाई (2010), 'ऐडवर्टाइज़िंग इज वाइडनिंग द गैप बिटवीन हैव्स ऐंड हैव-नॉट्स', ब्लॉग, *सिटी सिटी बैंग बैंग,* 21 अप्रैल की पोस्ट. इस लिंक पर उपलब्ध:
http://santoshdesai.com/2010/04/advertising-is-widening-the-gap-between-haves-and-have-nots/ (लिंक प्राप्ति की तिथि 3 सितम्बर 2012).

सेवंती नैनन (2007), *हेडलाइन्स फ्रॉम द हार्टलैंड :रिइंवेंटिंग द हिंदी पब्लिक स्फ़ीयर,* सेज, नयी दिल्ली.

स्कॉट बादॉफ़ (2004), 'अ हिंदी-इंग्लिश जम्बल, स्पोकन बाइ 350 मिलियन', *क्रिश्चियन साइंस मॉनिटर,* 23 नवम्बर, http://www.csmoniter.com/2004/1123/p01s03-wosc.html पर उपलब्ध. 3 सितम्बर, 2012 को देखा गया.

सुजाता चौधरी (2008), 'हिंग्लिश'- इज अपना कप्पा चाय!! ब्लॉगस्पॉट. इस लिंक पर उपलब्ध, http://sujatachowdhury.blogspot.co.uk/2008/01/hinglish-is-apna-cuppa-chai.html, 13 जनवरी (लिंक प्राप्ति तिथि 5 सितम्बर 2012).

सुमन परमार (2014), 'चैनल वी सीरियल्स : द चेंजिंग लैंग्वेज ऑफ़ ए यूथ ओरिएंटेड टीवी चैनल', सराय हिंग्लिश कार्यशाला, नयी दिल्ली 18-19 अगस्त. इस लिंक पर उपलब्ध : http://sarai.net/hinglish-workshop-18-19-august-2014-recordings/ (लिंक प्राप्ति की तिथि 31 जनवरी 2015).

सुनीता मल्होत्रा (1980), 'हिंदी-इंग्लिश, कोड-स्वीचिंग ऐंड लैंग्वेज च्वायस इन अरबन, अपर-मिडिल-क्लास इण्डियन फ़ैमिलीज़', पी. हैमल और आर. शेफ़र (सम्पा.), *कंसांस वर्किंग पेपर्स इन लिंग्विस्टिक्स* 5.

शोभना निझावन (2010), *नैशनलिज़म इन द वर्नाकुलर : हिंदी, उर्दू, ऐंड द पॉलिटिक्स ऑफ़ इण्डियन फ्रीडम,* परमानेंट ब्लैक, नयी दिल्ली.

शोमा मुंशी (2010), *प्राइम टाइम सोप ऑपेराज़ ऑन इण्डियन टेलिविज़न,* रुटलेज, नयी दिल्ली.

सी. ला डूसा (2014), *हिंदी इज़ अवर ग्राउंड, इंग्लिश इज़ अवर स्काई : एजुकेशन,लैंग्वेज, ऐंड सोशल क्लास इन कंटेम्पररी इण्डिया,* बर्गहन बुक्स, न्युयॉर्क.

हरीश त्रिवेदी (2003), 'सलमान द फ़ंटूश : मैजिक बायलिंगुअलिज़म इन मिडनाइटस चिल्ड्रेन', एम मुखर्जी (सम्पा.), *रश्दीज़ 'मिडनाइट चिल्ड्रेन' : अ बुक ऑफ़ रीडिंग्स,* पेनक्राफ्ट इंटरनैशनल, नयी दिल्ली.

हरीश त्रिवेदी (2011), 'प्राक्कथन', रीता कोठारी और रुपर्ट स्नेल (सम्पा.), *चटनीफ़ाइंग इंग्लिश: द फ़िनामेनन ऑफ़ हिंग्लिश,* पेंगुइन, नयी दिल्ली.